वार्षिक 300/- रूपए
website : www.vhp.org

मूल्य 15 रूपए
कुल पृष्ठ - 28

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

अप्रैल (16-30), 2024

हिन्दू विश्व

समरसता के प्रतिबिंब श्रीराम

रायपुर, छत्तीसगढ़ में संपन्न 'विश्व गुरू भारत, वर्तमान चुनौतियाँ एवं समाधान' विषयक विचार गोष्ठी को संबोधित करते विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे

कानपुर प्रांत में धर्मरक्षा निधि समर्पण कार्यक्रम को संबोधित करते विहिप केन्द्रीय सह संगठन महामंत्री श्री विनायकराव देशपाण्डे

देवघर में झारखण्ड प्रांत की प्रांत कार्यसमिति बैठक में क्षेत्र, प्रांत के पदाधिकारी व कार्यकर्ता उपस्थित रहे

हिन्दू विश्व
राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

हे अग्ने! आप इस पृथ्वी पर समस्त पोषक रसों को स्थापित करें। ओषधियों में जीवन रस को स्थापित करें। द्युलोक में दिव्यरस को स्थापित करें। अन्तरिक्ष में श्रेष्ठ रस को स्थापित करें। हमारे लिए ये सब दिशाएँ व उपदिशाएँ अभीष्ट रसों को देने वाली हों।

– यजुर्वेद

अप्रैल 16-30, (2024)
चैत्र शुक्ल - वैशाख कृष्ण पक्ष
नल संवत्सर
वि. सं. - 2080, युगाब्द- 5125

सम्पादक
विजय शंकर तिवारी

सह सम्पादक
मुरारी शरण शुक्ल
मो. - 7217685539

परामर्शदाता
सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा,
धर्मनारायण शर्मा, विजय कुमार,
रवि पराशर

व्यवस्थापक
श्री दूधनाथ शुक्ल
मो. - 09582555152

सज्जा
श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :
'हिन्दू विश्व'
संकटमोचन आश्रम, प्रभाग - 6
रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110022-05
दूरभाष : 09582555152

011-26178992, 011-26103495
hinduvishwa@gmail.com

- : मूल्य :-

विदेशों के लिए वार्षिक डाक व्यय सहित	$ 75 USD
एक प्रति	15/-
वार्षिक	300/-
त्रिवर्षीय	750/-
पंचवर्षीय	1,200/-
दसवर्षीय	2,250/-
पन्द्रह वर्षीय	3,100/-

वैधानिक सूचना

- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

@eHinduVishwa
@eHinduVishwa
@eHinduVishwa

कुल पेज - 28

सामाजिक समरसता के सबसे जीवंत प्रतीक हैं भगवान राम	05
श्रीराम के जीवन में सामाजिक समरसता	07
वाल्मीकी रामायण की सामाजिक समरसता	09
कच्चाथीवू द्वीप	11
जनता में समरसता पनपाने वाले राजाराम	12
श्री अयोध्या धाम में नवनिर्मित प्रभु श्रीराम मंदिर ने भारतीय समाज को एक किया है	14
जब प्रभु राम सबके हैं तो जातिगत द्वेश क्यों, मतदाता समझदार एवं सजग बनें	16
क्या है एक्स मुस्लिम मूवमेंट, जिसके चलते लोग छोड़ रहे इस्लाम	17
त्याग का स्वरूप	18
भारतीय संस्कृति में केसर का स्थायी महत्व	20
सत्यानाशी का पौधा	22
'भारत की अखंडता को अनेक बार खंड-खंड किया है कांग्रेस ने : विहिप'	23
सेवा, समर्पण, त्याग व धर्म के पर्याय बाबा तरसेम सिंह की हत्या से स्तब्ध हैं	24
झारखंड प्रांत कार्य समिति की तीन दिवसीय बैठक	25

सुभाषित

'एकेनापि सुवृक्षेण पुष्पितेन सुगन्धिना।'
'वासितं तद्वनं सर्वं सुपुत्रेण कुलं यथा।।'

जिस प्रकार एक सुन्दर पुष्पित एवं सुगन्धित वृक्ष से सारा उपवन सुरभित हो उठता है, उसी प्रकार कुल में उत्पन्न कोई एक सन्तान ही प्रतिष्ठा में श्रीवृद्धि कर देता है।

सम्पादकीय

विजय शंकर तिवारी

कच्चाथीवू भारत का हिस्सा था और पुन: वापस लेना चाहिए

कच्चाथीवू हमेशा से भारत का अभिन्न अंग रहा है। श्रीमती इंदिरा गाँधी द्वारा इसे श्रीलंका को सौंप देने का निर्णय मनमाना और असंवैधानिक था। यह भारत की संप्रभुता के साथ किया गया खिलवाड़ था और भारत की संसद, तमिलनाडु की विधानसभा एवं वहाँ के मछुआरों के साथ किया गया अन्याय एवं धोखा था। भारत की तत्कालीन काँग्रेस की सरकारों द्वारा भारत की संप्रभुता और अखंडता के प्रति इस लापरवाही के लिए विश्व हिंदू परिषद जैसे राष्ट्रवादी संगठन विरोध करते रहे हैं।

26 जून, 1974 को इंदिरा जी की सरकार ने कच्चाथीवू को श्रीलंका को प्लेट में इस प्रकार सजा कर दे दिया था, मानो वह उनकी व्यक्तिगत संपत्ति हो। 1956 से लेकर 1974 तक भारत की संसद में लंका की घुसपैठ और भारतीय मछुआरों की त्रासदी के बारे में कई बार प्रश्न किया गया, लेकिन तत्कालीन प्रधानमंत्रियों ने इस तरह के गोल–गोल जवाब दिए, जैसे उन्हें भारत की संप्रभुता और राष्ट्रीय अखंडता की कोई चिंता न हो। तमिलनाडु की विधानसभा ने तो इसे वापस लेने के लिए कई प्रस्ताव भी पास किए, लेकिन काँग्रेस की सरकारों के कानों पर जून तक नहीं रेंगी।

यह मनमाना निर्णय असंवैधानिक भी था, क्योंकि माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने बेरुबारी मामले में स्पष्ट कहा था कि भारत को किसी संधि के अंतर्गत अगर कोई हिस्सा किसी अन्य क्षेत्र को देना भी पड़ता है, तो संसद से उसकी स्वीकृति आवश्य लेनी चाहिए। इस मामले में संसद को न केवल अंधेरे में रखा गया, अपितु गलत बयानी भी की गई। यहाँ तक कि तमिल समाज की भावनाओं को समझने के लिए तमिलनाडु विधानसभा में भी इस विषय को लाने की आवश्यकता महसूस नहीं की गई।

भारत की संप्रभुता व अखंडता के संबंध में काँग्रेस की सरकारें हमेशा संवेदन शून्य रही हैं। हमारे मुकुट कश्मीर के 42,735 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर चीन ने तथा 34,639 वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र पाकिस्तान ने आजादी के थोड़े दिन बाद ही अपने कब्जे में ले लिया था, जिसको छुड़ाने का कोई गंभीर प्रयास इन सरकारों द्वारा नहीं किया गया। चीन के अवैध कब्जे पर तो नेहरू जी ने यहाँ तक कह दिया था कि "वहाँ कुछ पैदा नहीं होता, इसलिए उसकी चिंता नहीं करनी चाहिए।" राष्ट्रीय हितों के प्रति इसी प्रकार की संवेदनशून्यता नेहरू जी ने तब भी दिखाई थी, जब चीन ने तिब्बत पर अवैध कब्जा किया था।

आज समाज काँग्रेस नेतृत्व से जानना चाहता है कि भारतीय संप्रभुता के प्रति इतनी लापरवाही क्यों बरती गई, कच्चाथीवू के समर्पण से भारत के कौन से हित पूरे हो रहे हैं, संसद को धोखे में क्यों रखा गया? इस समझौते से पहले या बाद में संसद में क्यों नहीं चर्चा की गई, जबकि वैधानिक रूप से संसद की अनुमति चाहिए थी, तमिलनाडु के मछुआरों के हितों की रक्षा के लिए बार–बार आश्वासन देने के बावजूद उन सरकारों ने क्या किया?

आज केवल कच्चाथीवू को वापस लेने की चर्चा नहीं, तो अपने छीने गए क्षेत्रों को वापस लेने की बात होनी चाहिए। इस दुरूह कार्य को करने के लिए सरकार भी ऐसी चाहिए, जो राष्ट्रीय संकल्प को पूरा कर सके।

आज समाज काँग्रेस नेतृत्व से जानना चाहता है कि भारतीय संप्रभुता के प्रति इतनी लापरवाही क्यों बरती गई, कच्चाथीवू के समर्पण से भारत के कौन से हित पूरे हो रहे हैं, संसद को धोखे में क्यों रखा गया? इस समझौते से पहले या बाद में संसद में क्यों नहीं चर्चा की गई, जबकि वैधानिक रूप से संसद की अनुमति चाहिए थी, तमिलनाडु के मछुआरों के हितों की रक्षा के लिए बार–बार आश्वासन देने के बावजूद उन सरकारों ने क्या किया?

सामाजिक समरसता के सबसे जीवंत प्रतीक हैं भगवान राम

रवि पाराशर

राम ने विशाल मनोबल वाली वनवासियों की सेना की सहायता से ही रावण का घमंड तोड़ा। रावण ने राम की अर्धांगिनी का अपहरण किया था। यह ऐसा मसला था, जिससे रघुवंश की कीर्ति सीधे–सीधे जुड़ी थी। राम चाहते, तो अयोध्या और मित्र राज्यों की सेना की सहायता ले सकते थे। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं कर संदेश दिया कि कितनी भी बड़ी समस्या हो, सामाजिक समरसता के सहारे उसे दूर किया जा सकता है।

अयोध्या में भव्य, दिव्य भगवान राम का राष्ट्र मंदिर दुनियाँ भर में रह रहे आस्थावान भारतीयों के लिए सबसे बड़ी खुशखबरी है। भारत तेजी से आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है। ऐसे समय में अयोध्या का राम मंदिर भारतीय चेतना में आत्मनिर्भरता का मूल मंत्र साबित होगा, इसमें कोई संदेह नहीं है। विश्व बिरादरी के सामने राम मंदिर निर्माण में व्यापक जन–सहयोग के संकल्प ने भारत में अनेकता में एकता के भाव को नए सिरे से न केवल परिभाषित किया, बल्कि भारतीयों को परस्पर प्रगाढ़ सकारात्मकता के आकर्षण में बांधने का अदृश्य स्थाई सूत्र भी साबित हुआ।

अयोध्या के राजकुमार राम को भगवान का दर्जा वनवासियों के बीच रहने के कारण ही मिला। राम का पूरा जीवन सामाजिक समरसता के सर्वोत्तम उदाहरण सामने रखता है। चाहे निषाद राज से मित्रता कर उन्हें बराबरी का स्तर देने का मामला हो, या शबरी के जूठे बेर खाने का, या अहिल्या के उद्धार का, या जटायु को सम्मान देने की कथा, या फिर बहुत सी वनवासी प्रजातियों को बराबरी का दर्जा देने का मामला, राम का पूरा जीवन समाज के सभी तबकों को एक बराबर समझने में ही बीता। उन्होंने ज्ञानी–विज्ञानी ऋषियों को

निर्भय किया, उनको पूरा सम्मान दिया, अनेक क्षत्रिय राजाओं के साथ अच्छे संबंध स्थापित किए, तो वनवासियों को भी सम्मान की दृष्टि से देखा और अपने समकक्ष ही समझा।

पौराणिक साहित्य में बहुत बार वर्णन मिलता है कि त्रेता युग में अश्वमेध यज्ञ की परंपरा थी। अश्वमेध यज्ञ राज्य या शासन के विस्तार के लिए कराए जाते थे। यज्ञ आहूत कर मंत्रपूत अश्व यानी घोड़ा छोड़ दिया जाता था। जिन राज्यों में घोड़ा निर्विरोध गुजर जाता था,

उन राज्यों को यज्ञ कराने वाले राजा के अधीन मान लिया जाता था और जो घोड़े को रोक लेते थे, उनके साथ युद्ध किया जाता था। मतलब यह हुआ कि राज्य विस्तार के लिए युद्ध की परंपरा तब थी। इसके लिए मित्र सेनाएँ एक साथ भी आती ही होंगी। जैसा कि द्वापर युग में महाभारत महायुद्ध के समय भी हुआ था।

किंतु राम ने शक्तिशाली सप्तद्वीपाधिपति लंकेश रावण को परास्त करने के लिए अपने मित्र राज्यों की सेनाओं को एकजुट करने की नीति नहीं अपनाई, बल्कि विशाल मनोबल वाली वनवासियों की सेना के बल पर ही रावण का अहंकार चूर–चूर किया। रावण ने राम की अर्धांगिनी का अपहरण किया था। यह ऐसा मसला था, जिससे रघुवंश की कीर्ति सीधे–सीधे जुड़ी थी। राम चाहते, तो अयोध्या और मित्र राज्यों की सेना की सहायता ले सकते थे। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं कर सर्वोच्च संदेश दिया कि कितनी भी बड़ी बाधा हो, समस्या हो, कितना ही शक्तिशाली खलनायक हो, विपरीत परिस्थिति हो, सामाजिक समरसता के सहारे सभी पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

राम का जीवन समाज को सकारात्मक संदेश देता है। सामाजिक समरसता की भावना तभी बलवती हो सकती है, जब व्यक्ति अपने पारिवारिक कर्तव्यों के प्रति सजग हो। राम ने बिना कोई आपत्ति जताए पिता की आज्ञा का पालन किया और 14 वर्ष का वनवास जिया। राम क्षत्रिय थे। लेकिन माता कैकेयी के षड्यंत्र पर उन्होंने धैर्य और संयम नहीं खोया। हर हाल में माता–पिता की आज्ञा माननी है, यह संदेश उन्होंने दिया। रामचरित मानस में राम को वनवास और भरत को राजगद्दी के निर्णय पर लक्ष्मण के कुपित होने का वर्णन तो है, लेकिन राम के मन में किसी तरह के विचलन का वर्णन बिल्कुल नहीं है। वाल्मीकि की रामायण में तो लक्ष्मण इतने कुपित होते हैं कि वे राम से वनवास का आदेश ठुकराने का निवेदन करते हैं। लक्ष्मण कहते हैं कि वे विद्रोह कर देंगे। वे इतने आक्रोश में आते हैं कि पिता दशरथ की हत्या तक की बात कर बैठते हैं। लेकिन राम उन्हें धैर्यपूर्वक शांत करते हैं।

माता–पिता की आज्ञा के पालन में राम कोई विचलन स्वीकार नहीं करते। वे चाहते, तो सुख–सुविधाओं से जुड़े बहुत से साधन साथ लेकर जा सकते थे, क्योंकि वनवास के लिए ऐसी कोई शर्त नहीं थी। लेकिन उन्होंने कुछ नहीं ले जाने का निर्णय किया। उन्होंने राजपुरुष वाला वेश और श्रृंगार भी त्याग दिया। वनवासी वल्कल पहनते थे, इसलिए राम ने भी वैसा ही किया। पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण को भी ऐसा ही करने को कहा।

निषादराज गुह ने उनसे निवेदन किया कि वनवास के 14 वर्ष वे श्रृंगवेरपुर में ही बिताएँ, लेकिन वहाँ रात्रि विश्राम के लिए भी राम ने सुख–सुविधाएँ नहीं लीं। घास के बिछौने पर ही सोए। कैकेयी ने स्वपुत्र भरत के लिए राज–पाठ तो मांग लिया था, लेकिन उस समय भरत अयोध्या में नहीं, बल्कि अपनी ननिहाल में थे। राम वन को निकले, तब भरत को अयोध्या लाने के लिए राजदूत अयोध्या से निकले। पूरे रास्ते भरत को अयोध्या के घटनाक्रम की जानकारी नहीं दी गई। अयोध्या पहुँचने पर जब उन्हें सब पता चला, तो वे माँ कैकेयी पर बहुत क्रोधित हुए और राम को वापस लाने का निर्णय किया। भरत जब दल–बल के साथ राम से मिलने जंगल पहुँचे, तो तीनों माताएँ भी उनके साथ थीं। कैकेयी को भी राम को वन भेजने के निर्णय पर पछतावा था। उन्होंने भी राम से अयोध्या लौट कर राजतिलक कराने का आग्रह किया, किंतु राम नहीं माने। राम वनगमन के शोक में दशरथ स्वर्ग सिधार चुके थे। ऐसे में राम ने हर हाल में पित्राज्ञा मानने का ही निर्णय किया। हाँ, दशरथ जीवित होते और वे लौटने का आदेश देते, तो राम उसका पालन कर सकते थे। इस तरह राम ने सनातन समाज को बताया कि बड़ों के आदेश का पालन हर हाल में होना चाहिए।

रावण का वध कर अयोध्या लौटने के बाद राम का राजतिलक हुआ। जनश्रुति है कि तब राम ने एक धोबी की बात सुनकर सीता का परित्याग कर दिया। इस पर सवाल भी उठाए जाते हैं। असल में कहा जाता है कि धोबी ने अपनी पत्नी को घर से निकालते हुए कहा था कि मैं राजा राम नहीं हूँ, जो तुम्हारी बातों में आ जाऊंगा। कुछ ग्रंथों में यह उल्लेख भी है कि सीता अग्निपरीक्षा देकर ही अयोध्या लौटी थीं। बहुत से लोग इसकी भी आलोचना करते हैं। साथ ही बहुत से उपदेशक इसकी व्याख्या रूपक के रूप में करते हैं। ध्यान रखने वाली बात यह है कि राम को मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है। अर्थ यह हुआ कि उन्होंने सामाजिक परंपराओं को ध्यान में रखते हुए पुरुषोचित व्यवहार ही किया, उस समय जारी परंपरा का निर्वाह किया।

कितना ही बड़ा नायक हो, उसे लेकर नकारात्मक बातें भी समाज में होती ही हैं। माता सीता की अग्निपरीक्षा को लेकर भी तत्कालीन समाज में खुसफुसाहट हुई हो, तो यह सामान्य परिघटना ही कही जाएगी। राम राजा थे, फिर भी उन्होंने धोबी के वचनों पर संज्ञान लिया और जीवन संगिनी को त्यागने का निर्णय किया। राम से जुड़े प्राचीन साहित्य में हालांकि इस बात का उल्लेख है कि राम से विवाह से पूर्व सीता ने नर–मादा तोतों के एक जोड़े को अलग कर दिया था। गर्भवती मादा ने साथी के वियोग में प्राण त्याग दिए थे। बाद में नर तोता भी मर गया। वही तोता अगले जन्म में धोबी बना और उसने सीता से बदला लिया। कथा कुछ भी हो, हम सिर्फ इस तथ्य का उल्लेख कर रहे हैं कि राजा होते हुए भी राम ने शक्तिहीन समझे जाने वालों को महत्व दिया। सीता उनकी जीवन–संगिनी थीं। उनके अपहरण के बाद परदेस जाकर उन्होंने रावण जैसे शक्तिशाली राजा का वध किया और छोटी सी बात पर उन्हीं सीता को त्याग दिया।

राम के जीवन से हम सामाजिक समरसता का संदेश ग्रहण कर सकें, तो इससे उत्तम कुछ नहीं। अयोध्या में राम का भव्य मंदिर इस संदेश के प्रचार– प्रसार का मुख्य बिंदु बनेगा, इसमें कोई संदेह नहीं है। सामाजिक समरसता का संदेश संपूर्ण भारत में फैले, इस कारण ही मंदिर निर्माण प्रबंधन ने हर देशवासी से सहयोग लेने का निर्णय किया था। राम मंदिर निर्माण से राष्ट्र निर्माण का संकल्प हर हिंदू के मन में जागृत होगा, ऐसा विश्वास किया जा सकता है।

(अमर उजाला से साभार)

श्रीराम के जीवन में सामाजिक समरसता

डॉ. वंदना सेन

भारतीय सांस्कृतिक दर्शन की धारा को प्रवाहित करने वाले भारतीय साहित्य में वसुधैव कुटुम्बकम का भाव सदैव समाहित रहा है। महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण और संत तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस ने सामाजिक समरसता के भाव का प्रवाहन बहुत ही गहनता से किया है। उदारता के भाव से अनुप्राणित भारतीय साहित्य निश्चित ही विश्व समुदाय को अहिंसा और सामाजिक समरसता का धरातलीय संदेश देता है। जिसकी वर्तमान में पूरे विश्व को अत्यंत आवश्यकता है।

विश्व का प्रथम महाकाव्य महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण है। जिसमें भेदभाव और छूआछूत को महत्व न देकर केवल सामाजिक समरसता की ही प्रेरणा दी गई है। वनवासी राम का सम्पूर्ण जीवन सामाजिक समरसता का अनुकरणीय पाथेय है। श्रीराम ने वनगमन के समय प्रत्येक कदम पर समाज के अंतिम व्यक्ति को गले लगाया। केवट के बारे में हम सभी ने सुना ही है, कि कैसे भगवान राम ने उनको गले लगाकर समाज को यह संदेश दिया कि प्रत्येक मनुष्य के अंदर एक ही जीव आत्मा है। बाहर भले ही अलग दिखते हों, लेकिन अंदर से सब एक हैं। यहाँ जाति का कोई भेद नहीं था।

वर्तमान में जिस केवट समाज को वंचित समुदाय की श्रेणी में शामिल किया जाता है, भगवान राम ने उनको गले लगाकर सामाजिक समरसता का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया है। सामाजिक समरसता के भाव को नष्ट करने वाली जो बुराई आज दिखाई दे रही है, वह पुरातन समय में नहीं थी। समाज में विभाजन की रेखा खींचने वाले स्वार्थी व्यक्तियों ने भेदभाव को जन्म दिया है। वर्तमान में हम स्पष्ट तौर पर देख रहे हैं कि समाज को कमजोर करने का सुनियोजित प्रयास किया जा रहा है, जिसके कारण जहाँ एक ओर समाज की शक्ति तो कमजोर हो रही है, वहीं देश भी कमजोर हो रहा है। वर्तमान में राम राज्य की संकल्पना को साकार करने की बात तो कही जाती है, लेकिन उसके लिए सकारात्मक प्रयास नहीं किए जा रहे हैं। सामाजिक एकता स्थापित करने के लिए रामायण हम सभी को उचित मार्ग दिखा सकती है।

यह भी सर्वविदित है कि राम वन गमन के दौरान भगवान राम ने निषाद राज को भी गले लगाया, इसका यही तात्पर्य है कि भारत में कभी भी जातिगत आधार पर समाज का विभाजन नहीं था। पूरा समाज एक शरीर की ही तरह था। जैसे शरीर के किसी भी हिस्से में दर्द होता है, तब पूरा शरीर अस्वस्थ हो जाता था। इसी प्रकार समाज की भी अवधारणा है, समाज का कोई भी हिस्सा वंचित हो जाए, तो सामाजिक एकता की धारणा समाप्त होने लगती है। हमारे देश में जाति आधारित राजनीति के कारण ही समाज में विभाजन के बीजों का अंकुरण किया गया, जो आज एकता की मर्यादाओं को तार–तार कर रहा है।

भगवान राम ने अपने वनवास काल में समाज को एकता के सूत्र में पिरोने का काम पूरे कौशल के साथ किया। समाज की संग्रहित शक्ति के कारण ही भगवान राम ने आसुरी प्रवृति पर प्रहार किया। समाज को निर्भयता के साथ जीने का मार्ग प्रशस्त किया। इससे यही शिक्षा मिलती है कि समाज जब एक धारा के साथ प्रवाहित होता है, तो कितनी भी

बड़ी बुराई हो, उसे नत मस्तक होना ही पड़ता है। सीधे शब्दों में कहा जाए तो संगठन में ही शक्ति है। इससे यह संदेश मिलता है कि हम समाज के साथ कदम मिलाकर नहीं चलेंगे, तो हम किसी न किसी रुप में कमजोर होते चले जाएंगे और हमें कोई न कोई दबाता ही चला जाएगा। सम्पूर्ण समाज हमारा अपना परिवार है। कहीं कोई भेदभाव नहीं है। जब इस प्रकार का भाव बढ़ेगा, तो स्वाभाविक रुप से हमें किसी भी व्यक्ति से कोई खतरा भी नहीं होगा। आज समाज में जिस प्रकार के खतरे बढ़ते जा रहे हैं, उसका अधिकांश कारण यही है कि हम समाज का हिस्सा बनने से बहुत दूर हो रहे हैं। अपने जीवन को केवल भाग दौड़ तक सीमित कर दिया है। यह सच है कि व्यक्ति ही व्यक्ति के काम आता है। यही सांस्कृतिक भारत की अवधारणा है।

पूरे विश्व में भारत एक सांस्कृतिक राष्ट्र के रूप में पहचाना जाता है, जब हम भारत को राष्ट्र बोलते हैं, तब हमें इस बात का बोध होना ही चाहिए कि राष्ट्र आखिर होता क्या है ? हम इसका

अध्ययन करेंगे, तो पता चलेगा कि राष्ट्र की एक संस्कृति होती है, एक साहित्यिक अवधारणा होती है, एक आचार विचार होता है, एक जैसी परंपराएँ होती हैं। भगवान राम के जीवन में इन सभी का साक्षात दर्शन होता है, इसलिए कहा जा सकता है कि राम जी केवल वर्ग विशेष के न होकर सम्पूर्ण विश्व के हैं। उनके आदर्श हम सभी के लिए हैं। हमें राम जी के जीवन से प्रेरणा लेकर ही अपने जीवन को उत्सर्ग के मार्ग पर ले जाने का उपक्रम करना चाहिए।

(प्रभासाक्षी से साभार)

'समाज के द्वारा समाज के सहयोग से समाज के लिए काम करना समाज का दायित्व : मा चंपत राय जी'

कानपुर। फाल्गुन कृष्ण नवमी, मंगलवार, विक्रम संवत् २०८०, तदनुसार 5 मार्च 2024। विश्व हिन्दू परिषद् कानपुर महानगर द्वारा होटल लिटिल शेफ सिविल लाइंस में आयोजित धर्मरक्षा निधि समर्पण के कार्यक्रम का श्रीगणेश विहिप केन्द्रीय उपाध्यक्ष एवं श्रीराम जन्मभूमि तीर्थक्षेत्र न्यास के महासचिव मा. चंपतराय जी, श्रीमती नीतू सिंह जी, श्री गुलशन धूपर जी, श्री नवीन भार्गव जी, श्री राजीव त्रिपाठी जी, विहिप क्षेत्र संगठन मंत्री श्री गजेन्द्र जी, विहिप प्रान्त अध्यक्ष श्री राजीव महाना जी, कार्याध्यक्ष डॉ. उमेश पालीवाल जी, श्री परमेश्वर जी, श्री नरेश माहेश्वरी जी ने श्रीराम जानकी दरबार का पूजन–अर्चन कर किया।

श्री चंपत राय जी ने संबोधित करते हुए कहा कि हिन्दू समाज को आंतरिक रूप से स्वस्थ, स्वावलंबी, पुरुषार्थी, स्वाभिमानी बनाना है। स्वाभिमानी समाज ही जीवन मूल्यों की रक्षा कर सकता है। हिन्दू समाज को खोखला करने वाले षड्यंत्रों, बुराइयों

को समाप्त करने के लिए निरंतर कार्य करते रहना है। भारत तरूणों का देश है, भारत की तरुणाई को संस्कारित बनाना, जागृत करना, लौकिक व्यवहार में भाईचारा आवश्यक है। समाज के द्वारा, समाज के सहयोग से, समाज के लिए काम करना, समाज का ही दायित्व है, निरंतर बंधुत्व के भाव से समाज को जोड़ना हमारा कार्य है।

उन्होंने कहा कि जो करोड़ों लोग हमारे समाज से कालांतर में छीन लिए गए, उन्हें अपनी जड़ों को याद करने का निरंतर आग्रह करते रहना, भारत पुनः विश्व गुरु बने, सांस्कृतिक गौरव की पुनर्स्थापना हो यह संपूर्ण हिन्दू समाज का दायित्व है। धर्मरक्षा निधि समर्पण में विशेष योगदान करने वाले भगिनी बन्धुओं को सम्मानित किया गया। विहिप प्रान्त अध्यक्ष श्री राजीव महाना जी ने आए हुए सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

वाल्मीकीय रामायण की सामाजिक समरसता

नागेन्द्र उपाध्याय

शोध आलेख, सार :– महाकवि वाल्मीकि ने लोकमंगल की उदात्त भावना से ही महाकाव्य रामायण की रचना की तथा उदात्त संस्कृति के साथ–साथ उसमें सामाजिक जीवन की व्यापक दृष्टि अपनायी। रामायण के नायक एवं उनके सेवक हनुमान् ने जन–जन के कष्ट निवारण हेतु अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया है। रामायण समाज का पथ प्रदर्शक, लोकजीवन का काव्य, समता मूलक समाज का आदर्शमय रूप प्रस्तुत करती है। रामायण में सामाजिक न्याय तथा समानता का यथार्थ चित्रण है। सामाजिक समरसता का अद्‌भुत उदाहारण विश्व के पटल पर एक मात्र महर्षि वाल्मीकि की रामायण ही है। मुख्य शब्दः महाकवि, उदात्त, संस्कृति, सर्वस्व, आदर्शमय, अद्‌भुत।

युग द्रष्टा महाकवि वाल्मीकि ने लोकमंगल की उदात्त भावना में परिचालित होकर ही महाकाव्य रामायण की सर्जना की है। फलतः रचना में उदात्त संस्कृति के साथ–साथ लोक संस्कृति के तत्त्व अपने आप ही समाहित हो गये हैं। एक तरफ जहाँ उदात्त संस्कृति के अनुपम जीवन मूल्यों की स्थापना हुई है, वहीं दूसरी तरफ लोक संस्कृति जीवन को गहराई से समझने परखने का आधार बन सकी है। महाकवि ने अपने रामायण में सामाजिक जीवन की व्यापक दृष्टि अपनायी है। उनके नायक श्रीराम राजपुत्र होते हुए भी जनमानस के अन्तः में प्रविष्ट कर जाने वाले जन नेता हैं। श्रीराम के अनन्य श्री हनुमान् भी जनहित चिंतक, अति कल्याणकारी, जन–जन का संकट मोचक, सर्व पाप–तापहारी एवं कष्ट निवारक हैं–

लोक–लोकप–कोक–कोका–नदशोक–हर,
हंस–हनुमान् कल्याणकर्ता।
को नहिं जानत है जग में
कपि संकट मोचन नाम तिहारो।।

हनुमान् एक विशिष्ट सामाजिक व्यक्तित्त्व हैं। वे आधुनिक वंचक, धूर्त नेताओं के समान समाज कल्याण करने की शपथ लेकर स्वयं के कल्याण में तत्पर रहने वाले, जनता के पैसे पर वायुयान का सैर करने वाले तथा अपनी सुविधा और अपना वेतन बढ़ाकर आनन्द मनाने वाले नहीं हैं। वे तो दीन–दुखियों का दुख–दर्द दूर करने में ही जीवन समर्पित करने वाले हैं–

दीनार्ति दानवदहनो वरदो वरेण्यः
संकट मोचन विभुस्तनुतो शुभं नः।

वे सत्ताधारी, शक्तिशाली बाली को सहयोग नहीं देकर वे समस्याग्रस्त, प्रताड़ित सुग्रीव का दुख– दर्द बाँटने और दूर करने में ही अपने जीवन को समर्पित करते दिखाई देते हैं। निर्बल के सहायक हनुमान् ने कमजोर सुग्रीव का संकट हरण किया। दुख–दर्द से युक्त श्रीराम का भी दुःख–दर्द छुड़ाया हनुमान् ने। वस्तुतः ये दुखहारी संकटमोचन हैं। शोक सन्तप्त सीता का शोक हरण किया हनुमान् ने ही। लक्ष्मण के प्राण की रक्षा की हनुमान् ने ही। भरत को भी प्राण त्यागने से बचाया हनुमान् ने ही–

दूरीकृतसीतार्तिः प्रकटीकृत रामवैभव स्फूर्तिः।
दारितदशमुखकीर्तिः पुरतो मम भातु हनुमतोमूर्तिः।।

सही अर्थों में रामायण उच्चतम धरातल का महाकाव्य रहा है। यह उच्चतम भावबोध का महाकाव्य है। यह युग–मंगल का सारथी महाकाव्य रहा है। शिवम् का दिशा निर्देशक महाकाव्य है। 'सुरसरि सम सब कह हित होई' एवं 'सबहिं सुलभ सब दिन सब देश' का ऐसा महाकाव्य है, जो जन–जन की संस्कृति एवं चेतना का प्रतिपल रक्षण एवं सिंचन कर रहा है। महाकवि का स्वान्तः सुखाय, लोक–हिताय, जन हिताय होकर जन–मन का रंजन करता हुआ, उनकी चेतना का उदात्तीकरण कर रहा है। वस्तुतः महाकवि वाल्मीकि अपने ही युग के नहीं अपितु युग–युग के जन नेता बन गये हैं तथा उनके महाकाव्य के महान् पात्र हनुमान् भी जननायक हो गये हैं।

उनके जननायक होने का मूल पक्ष है, निर्बलों का सहायक होना। उनका संकटहारी रूप एवं बिना किसी भेदभाव के सबके लिए मंगलकारी एवं भवभयहारी है। उनके बारह नाम सभी तरह के संकटों का नाशक है–

हनुमान् अञ्जनी सूनर्वायुपुत्रो महाबलः।
रामेष्टः फाल्गुनसखः पिङ्गाक्षोऽमितविक्रमः।।
उदधिक्रमणश्चैव सीताशोकविनाशनः।।
लक्ष्मणप्राणदाता च दशग्रीवदर्पहा।।

वाल्मीकीय रामायण के हनुमान् के जीवन में तीन शब्द मुख्य रूप से आते हैं–चरित्र, लीला और कथा। हनुमान् के जीवन की उदात्त विशेषताओं का चरित्र कहना समीचीन होगा। जबकि उनके द्वारा किये गये अभिनय को लीला कहा जायेगा तथा उनके जीवन में घटित होने वाली घटनाओं के वर्णन क्रम को कथा कहा जायेगा। उनके द्वारा की जा रही लीलाओं को लोगों ने चरित्र समझकर भ्रम पाल लिया है और उन्हें निरा बन्दर मान बैठे हैं।

समाज का पथ प्रदर्शक महाकाव्य रामायण–

कवि की अन्तरात्मा की भावमयी अभिव्यक्ति का ही नाम काव्य है। महाकाव्य रामायण महर्षि वाल्मीकि की विशिष्टतम विशेषता का पावन पुंज स्वरूप है। वस्तुतः कवि या लेखक अपने राष्ट्र अथवा समाज के मस्तिष्क और मुख दोनों होते हैं। कवि समाज का दिव्य द्रष्टा एवं सशक्त स्रष्टा होता है। समाज एवं राष्ट्र के स्वरूप को सजाना–संवारना ही उसका मुख्य कर्तव्य होता है। इसीलिए कवि वाल्मीकि भारतीय समाज एवं राष्ट्र के उन्नायक एवं विमल विधायक बन गए हैं। वे पावन प्रजापति स्वरूप हैं। रामायण के माध्यम से भारतीय समाज को सजाना–सँवारना ही उनका लक्ष्य एवं उद्देश्य प्रतीत होता है। यह महाकाव्य भारतीय समाज के आचार–विचार, सभ्यता–संस्कृति, धर्म–दर्शन एवं रीति–नीति का सर्वांगीण आदर्श प्रस्तुत करता हुआ दीख पड़ता है।

लोक–जीवन का काव्य–

रामायण लोक–जीवन का काव्य है। इसके दिव्यतम नायक हैं–दिव्य चरित्र सम्पन्न, देश–वासियों के जीवन में रम्य रसायन सा रम जाने वाले रमणीय श्रीराम, जिनकी चरित्र ज्योति से यह महाकाव्य उद्भाषित है। यह महाकाव्य लोक जीवन में प्रिय है। सामान्य जनों, धनी से निर्धनों, स्त्री–पुरूषों तथा आबाल–वृद्धों के बीच इसकी महत्त्वपूर्ण ख्याति है–

रामायणं नामपरं तु काव्यं पुण्यप्रदं वै शृणुत द्विजेन्द्राः।
यस्मिन् श्रुतेजन्म जर्शाद नाशो भवत्यदोषः सनरो उच्यतः स्यात्।।

समता मूलक समाज का समदर्शी स्वरूप–

महर्षि वाल्मीकि का रामायण समाज के समतामूलक समदर्शी स्वरूप का आदर्शमय रूप प्रस्तुत करती है। रामायण के श्रीराम मानवता के महान् मानदण्ड हैं। उनकी दृष्टि में सम्पूर्ण मानव–समाज एक समान है। वे सबको समान भाव से देखते एवं मिलते हैं। मानव के अन्तःकरण में ज्ञान की गंगा प्रवाहित कर, उसमें समत्व का भाव जगा देने वाला अलौकिक जादू रामायण महाकाव्य में सन्निहित है–

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानानां उपासते।।

आज के भारतीय समाज में जहाँ जनता–नेता, सत्ताधारी पदाधिकारी, शासित–शासक, पिता–पुत्र, पति–पत्नी, भाई–भाई, गुरू–शिष्य, परिवार एवं समाज के प्रत्येक स्थल पर विचार वैभिन्य एवं मत–मतान्तर हैं। ऐसे समय में महाकवि वाल्मीकि के रामायण में सन्निहित समदर्शिता मूलक दृश्यों एवं चरित्रों का समीक्षात्मक विश्लेषण अत्यन्त अपेक्षित है। वास्तव में महाकवि वाल्मीकि एक अति महान उद्देश्य प्रेरित एवं अनुप्राणित प्रतिबद्ध कवि हैं। उनकी काव्यानुभूति तत्कालीन एवं वर्तमान समाज की चेतना के केन्द्र बिन्दु पर टिकी है। अति संवेदनशील महाकवि ने देश एवं समाज के स्वरूप को देखा एवं परखा कि समाज अपनी सांस्कृतिक एवं राष्ट्रिय मूल धारा से कटकर अलग–थलग पड़ रहा था। वेदों में वर्णित उदात्त तथ्य एवं पुराणों की मणि मंजूषा की कुंजी अज्ञानान्धकार में खोने लगी थी। अस्तु, टूटते हुए समाज के समक्ष महाकवि ने समदर्शिता समन्वित अति आदर्श समाजवादी उद्घोषणा के साथ प्रस्फुटित कर दिया आदि महाकाव्य रामायण।

रामायण का महत्त्व जितना आध्यात्मिक दृष्टि से है, उससे तनिक भी कम महत्त्व लौकिक एवं सामाजिक दृष्टि से नहीं है। समदर्शिता समन्वित समाज का जो आदर्श रूप उनकी मानसिक कल्पना में साकार था, उसका उपक्रम से उपसंहार तक विनियोग करते हुए रामराज्य की स्थापना के रूप में परिणति प्रस्तुत की है। महाकवि वाल्मीकि के राम राज्य की व्यवस्था में आपसी भेदभाव की स्थिति नहीं है। समता मूलक समाज की स्थापना एवं सामाजिक न्याय का पूर्ण प्रतिफलन हो सका था राम राज्य में। श्रीराम ने पुत्र की भाँति प्रजा का पालन करते हुए दस हजार या ग्यारह हजार वर्षों तक राज्य शासन किया–

औरसानिव रामोपि जुगोप पितृवत्प्रजाः।
सर्वलक्षणसंयुक्तः सर्वधर्मपरायणः।।
दशवर्षसहस्राणि रामो राज्यमुपास्त सः।।

वाल्मीकि के राम ऐसे सर्व सुलभ, सर्व हितकारी, समदर्शी हैं, जिन्हें हम अपने जीवन में जिस रूप में पाना चाहे, ले आना चाहें, हम ला सकते हैं, पा सकते हैं। महाकवि की दृष्टि में श्रीराम जो महाकाव्य के नायक हैं, सर्वसुगम, सर्वसुलभ, परम पावनी गंगा के समान पावन हैं।

सामाजिक न्याय की प्राप्ति–

वाल्मीकीय रामायण के महानायक श्रीराम के राज्य में सामाजिक न्याय मात्र नारा ही नहीं था, वरन् समाज के कमजोर से कमजोर व्यक्ति को भी समानता के साथ सामाजिक न्याय प्राप्त होता था। जनता के बीच किसी भी प्रकार का वैर–विरोध नहीं था और न उच्च–नीच का भाव ही था। आदिकवि महर्षि वाल्मीकि के आदिकाव्य रामायण महानायक श्रीराम, आनुवांशिक परम्परा के सम्राट होते हुए भी, राजतन्त्रीय राजा होते हुए भी जनता के हृदय के हार हैं। प्रतीत होता है कि वे आधुनिक प्रजातन्त्र के चुने गये जनमान्य नेता हैं। पंचों की राय लेकर राजा दशरथ ने उन्हें राजा बनाना चाहा, लेकिन उन्होंने स्वीकार नहीं किया, क्योंकि मन्थरा और कैकेयी इसका विरोध कर रही थीं। जब तक राज्य में एक भी व्यक्ति विरोध रहेगा, तब तक वे राजा बनना नहीं चाहेंगे। यही उनका जीवन–दर्शन है। जीवन का उत्तमोत्तम आदर्श है। आधुनिक प्रजातन्त्रीय व्यवस्था की भाँति वे बहुमत के नेता न होकर सामाजिक न्याय प्रणाली के सर्वमान्य नेता हैं। वस्तुतः महर्षि वाल्मीकि की रामायण में सामाजिक समरसता का जो उदात्त यथार्थ चित्रण वर्णित है, वह विश्व के किसी अन्य स्थलों पर प्राप्त नहीं होता। आज आवश्यकता है कि विश्व के जन–जन के कण्ठ–कण्ठ में इसका रसास्वादन कराया जाय, तभी आतंकवाद, नस्लवाद आदि को समाप्त कर प्रेमभावना को भरा जा सकता है।

कच्चाथीबू द्वीप

इंदिरा गांधी ने इसे गिफ्ट करने के पीछे दिया यह तर्क

इस दौरान दोनों देशों के बीच कुल 4 सामुद्रिक समझौतों पर हस्ताक्षर हुए। इंदिरा गाँधी ने कहा– कच्चाथीबू द्वीप का कोई सामरिक महत्व नहीं है। इस आयलैंड को श्रीलंका को देने से दोनों देशों के बीच रिश्ते मजबूत होंगे। दोनों देशों के बीच यह तय हुआ कि इस द्वीप पर जाने के लिए भारतीयों को किसी भी तरह के वीजा की जरूरत नहीं होगी। यही नहीं भारतीय मछुआरे इस द्वीप पर बिना किसी इजाजत के जाल डाल सकेंगे। हालांकि इस समझौते के बाद भी कई बार श्रीलंका ने यहाँ भारतीय मछुआरों के जाने पर उन्हें पकड़ लिया। 1976 में दोनों देशों के बीच एक और समझौता हुआ, जिसमें दोनों देशों के मछुआरों को इस द्वीप के आसपास जाने से रोका गया।

कहाँ है कच्चाथीबू आयलैंड

कच्चाथीबू विवाद क्या है इस बारे में जानने से पहले यह जान लेते हैं कि आखिर कच्चाथीबू कहाँ पर है। यह आयलैंड रामेश्वरम और श्रीलंका के बीच स्थित एक छोटा सा द्वीप है। रामेश्वरम से 12 मील की दूरी पर यह स्थित है। वहीं श्रीलंका के जाफना इलाके से इसकी दूरी 10.5 मील है। यह पूरा आयलैंड करीब 285 एकड़ में फैला हुआ है। लंबाई की बात की जाए तो 1.6 किमी है, जबकि इसकी चौड़ाई 300 मीटर है। हालांकि इस आयलैंड पर कोई नहीं बसा है। यह विरान पड़ा हुआ है। लेकिन इस आयलैंड के सबसे करीब आबादी वाले क्षेत्र की बात करें, तो वह डेल्फ आयलैंड है, जो श्रीलंका में है।

20वीं सदी में कच्चथीवू में बना एक चर्च

कच्चाथीवू द्वीप की बात करें, तो यहाँ पर सिर्फ एक ही इमारत मौजूद है और वह भी 20वीं शताब्दी में बनाई गई। यह इमारत एक चर्च है। हर वर्ष फरवरी और मार्च में यहाँ प्रेयर होती है। खास बात यह है कि इस प्रेयर में भारत और श्रीलंका दोनों के पादरी मौजूद रहते हैं। साथ ही बड़ी सँख्या में श्रद्धालू भी आते हैं। इसके बाद 20वीं सदी में ही यहाँ पर एक मंदिर का भी निर्माण हुआ। इसमें थंगाची मठ के पुजारियों ने नियमित पूजा करने का बीड़ा उठाया।

क्यों नेहरू ने नहीं दिया इस द्वीप को महत्व

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने इस द्वीप को ज्यादा महत्व नहीं दिया। कुछ दस्तावेजों में इस बात का खुलासा भी हुआ। दरअसल पूर्व पीएम नेहरू ने 10 मई 1961 में इस द्वीप के विवाद पर एक नोट लिखा– उन्होंने कहा– 'मैं इस द्वीप को बिल्कुल महत्व नहीं देता, साथ ही इस द्वीप पर अपना दावा छोड़ने में भी मुझे कोई झिझक नहीं है। इस तरह के मामलों को अनिश्चितकाल तक लंबित रखना और इसे संसद में बार–बार उठाया जाना भी पसंद नहीं है।' इस तरह नेहरू के इस नोट ने साफ कर दिया कि उनकी कच्चाथीवू द्वीप में कोई रूचि नहीं थी।

इंदिरा गाँधी ने क्यों किया गिफ्ट

कच्चाथीवू द्वीप को लेकर पंडित नेहरू के बाद पूर्व पीएम इंदिरा गाँधी ने एक कदम आगे बढ़ाते हुए इस द्वीप को श्रीलंका को ही सौंप दिया। वर्ष 1974 में इंदिरा ने श्रीलंका के साथ चल रहे समुद्री विवाद को हल करने की कोशिश की। दोनों देशों के बीच कई दौर की बातचीत हुई, इस बीच एक खास समझौता हुआ, इस समझौते का नाम 'इंडिया–श्रीलंका मैरिटाइम एग्रीमेंट' है। इस समझौते के तहत इंदिरा गाँधी ने श्रीलंका के तात्कालीन राष्ट्रपति श्रीमा भंडारनायके को कच्चाथीवू द्वीप सौंप दिया।

क्यों काँग्रेस पर हमलावर है बीजेपी

बीजेपी का आरोप है कि काँग्रेस सरकार ने जब कच्चाथीबू द्वीप को श्रीलंका को सौंपने का निर्णय लिया, तो तमिलनाडु सरकार से कोई सलाह नहीं ली गई। हालांकि काँग्रेस का दावा है कि इस बारे में करुणानिधि से विचार–विमर्श किया गया था। हालांकि उस दौरान तमिलनाडु में इस द्वीप को सौंपे जाने पर जमकर प्रदर्शन भी हुआ।

मुरारी शरण शुक्ल
(सह सम्पादक हिन्दू विश्व)

जनता में समरसता पनपाने वाले राजाराम

भगवान श्रीराम का पृथ्वी पर अवतरण हुआ सज्जन प्रतिपालन के लिए, दुर्जनों के विनाश के लिए और धर्म की स्थापना के लिए। उन्होंने सज्जन–दुर्जन में भेद तो किया, जाति–वर्ग का भेद कभी भी नहीं किया। उन्होंने रंगभेद भी कभी नहीं किया। वैसे तो वो स्वयं ही सांवले स्वरुप के थे। उन्होंने धनिक और निर्धन का भेद भी नहीं किया। किसी भी आधार पर भेद करना समदर्शी प्रभु श्रीराम के स्वभाव में था ही नहीं। उन्होंने मनुष्य तो मनुष्य खग, मृग इत्यादि पशुओं के प्रति भी भेद दृष्टि नहीं रखा। उनके बाल्यकाल में वो कौए इत्यादि पक्षियों से खुब खेला करते थे, उनको अपना भोजन खिलाया करते थे। उनका पेड़–पौधों से अनुराग भी अद्भुत था। वो तो वन गमन करते समय मार्ग में आने वाली सरयू, तमसा और गंगा की पूजा करने के पश्चात ही नदी में पैर रखते हैं। अयोध्या की मिट्टी की पूजा करते हैं। मिट्टी अपने साथ ले जाते हैं। जिसको व्यक्ति और प्रकृति में कोई भेद दिखाई नहीं देता, वह राम तो सबको एक समान दृष्टि से देखता है। वह समदरसी है, उसके यत्नों से ही अद्भुत और समरस रामराज्य की स्थापना हो सकी।

राम के साथ गुरुकुल में सहपाठी थे निषादराज गुह। जैसे ही श्रीराम श्रृंगबेरपुर पहुँचे, निषादराज उनको मिले, श्रीराम ने अपने सहपाठी निषादराज को गले लगाया। केवट के हठ को सहजता से मान नाव पर पैर रखने से पहले अपना चरण धुलवाने की केवट की जिद्द मान ली। लौटते समय भी केवट से मिले बिना अयोध्या नहीं गए। केवट को दिए गए वचन पुर्ण किया। जब श्रीराम नाव से पार उतरने पर केवट को पारिश्रमिक रुप में अपनी मुद्रिका देते हैं, तो केवट श्रीराम से अपनी तुलना करता है और कहता है कि मैं गंगा नदी पार कराने वाला नाविक हूँ और आप भवसागर पार कराने वाले नाविक हैं। फिर तो आप हमारी जाति के हुए। जैसे नाई किसी दूसरे नाई से बाल की कटाई की मजदूरी नहीं लेता, जैसे धोबी दूसरे से कपड़े की धुलाई नहीं लेता, वैसे यह नाविक आप भवसागर के खेवैया से मजदूरी कैसे ले सकता है। मैंने बहुत वर्षों तक मजदूरी की है, लेकिन ऐसी मजदूरी मुझे कभी नहीं मिली, जैसी आज मिली। केवट पुनः कहता है कि आज कुछ नहीं लूंगा। आप वापसी के समय जो दे देंगे, वह प्रसाद रूप में सिर चढ़ाकर रख लूंगा। ऐसा अनुराग कभी पराये गोत्र वाले से, सहोदर भाई के अतिरिक्त किसी और से शायद ही होता है। यह श्रीराम के प्रेम का प्रभाव था कि केवट बस मिलन मात्र से ही राम का हो गया।

जो राम को मिलता, वह राम का ही हो जाता। राम किसी को अपने से भिन्न समझते ही नहीं थे। सबको अपना समझना और सबको अपना लेना, मानो राम का स्वभाव ही था। राम को सभी अपने जैसे ही लगते थे। आत्मवत् सर्वभूतेषू का भाव उनके हृदयपटल पर सदैव अंकित रहा। सबरी ने राम के आने के मार्ग के बारे में सुना मात्र था। अपने गुरु के कहने से वह उसी मार्ग पर टिक गई। रास्ता बुहारती रही वर्षों तक, तब जाकर उसके आश्रम में एक दिन राम आये, जूठे बेर खाए, भक्ति का उपदेश सुनाए। वह इतनी तृप्त हो गई कि उसी क्षण योगाग्नी से अपना देह भष्म कर लिया और भगवत् धाम चली गई। वह सन्यासीनी थी, तपस्विनी थी, बड़भागिनी थी।

वनवासी हनुमान जब राम से मिलते हैं, राम का दुख जान, धर्म पत्नी के हरण और वियोग की बात जानकर, उनकी करुणा को जान भाव विभोर हो गए। जब हृदय में प्रेम का संचार हुआ, तो छण भर की देर किए बिना राम ने कहा– तैं मम प्रिय लछिमन ते दूना।। राम को आभ्यांतरिक रूप से तुरंत जान

लेते हैं हनुमान जी और उन्हें सुग्रीव से मिलने और मित्रता करने को कहते हैं। और उसे दीन जानकर अभय प्रदान करने को कहते हैं। सुग्रीव से राम को मिलाने के बाद अग्नि की साक्षी देकर दोनों की मित्रता दृढ़ करा देते हैं। हनुमान जी सुग्रीव के कष्ट दूर करवा देते हैं। यही सुग्रीव सेना सीता जी का पता लगाती है, लंका जाने के लिए सागर पर पुल बनाती है, रावण के कुल का नाश करती है, रावण से युद्ध जीतती है, सीताजी को अशोक वाटिका से वापस लाती है, राम जी को पुनः अयोध्या पहुंचाती है, राम के वन गमन के उद्देश्य को पुर्ण कराती है। राम के स्वभाव ने सबको मंत्रमुग्ध कर लिया, राम सबके हो गए, सब राम के हो गए। अंगद, जाम्बवान सब ने श्रीराम के काम को ही अपना काम मान लिया।

जटायु से मिलते ही राम ने जब उनके अपने पिता का मित्र होने की बात जाना और जटायु द्वारा पिता तुल्य कर्तव्य का निर्वहन और उससे उपजी पीड़ा जाना, तो उनकी सेवा भी पिता की भांति की और श्राद्ध–तर्पण भी पिता की भांति ही किया। जटायु राम से मिलते ही सभी पीड़ाओं से मुक्त हो गए। राम का मिलन और स्पर्श अद्भुत था। राम का नाम तो उससे भी पवित्र है। तभी तो कहा है–

स्वपच सबर खस जमन जड़ पावँर कोल किरात।
रामु कहत पावन परम होत भुवन बिख्यात।।

राम कहते ही सबके दुख दूर हो जाते हैं। सभी जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं। राम से मिलने जब विभीषण आए, तो राम ने कोई पूछताछ नहीं की, कोई शुद्धिकरण नहीं करवाया, सीधे गले लगाया, उनको अपनाया। ऐसा अहैतुक प्रेम श्रीराम ही कर सकते थे। विभीषण यद्यपि शरण में आए, श्रीराम ने तब भी लंका विजय के पश्चात राजगद्दी पर विभीषण को ही बिठाया। स्वयं राजगद्दी पर नहीं बैठे, लक्ष्मण को भी नहीं बिठाया। विभीषण की पीड़ा निर्मूल हो गई। राम ऐसे राजा हैं, जो सर्वेषां अविरोधेण के मत से राज्य चलाते हैं। राज्य जनता की थाती है और जनता में एक भी विरुद्ध है, तो निर्णय के औचित्य का विचार अति आवश्यक है। एक धोबी के विरोध मात्र से, उन्होंने स्व पत्नी को राजमहल से दूर ऋषि के आश्रम में रहने को कहा। राजा का कर्तव्य किसी व्यक्तिगत सम्बन्धी के सम्बन्ध से बड़ा होता है। जनता की प्रसन्नता के आगे व्यक्तिगत सम्बन्धों को महत्व देने से अन्याय का आरम्भ होता है। यह सम्बन्ध वाला मोह, पुत्रप्रेम के रूप में धृतराष्ट्र के जीवन में था, जो महाभारत का कारण बनी। राम इससे उपर उठते हैं और अनन्य प्रेम होने पर भी व्यक्तिगत सम्बन्धों पर राज्य के कर्तव्य को वरियता देते हैं। अपनों से मोह के कारण ही अर्जुन ने कुरुक्षेत्र में शस्त्र रख दिया था। यह मोह राम को छु भी नहीं पाता है। राम प्रजापालन के मार्ग में आने वाली हर बाधा को दूर करते हैं। राम राज्य की जनता को पुत्रवत प्रेम करते हैं। राजा का प्रजा से ऐसा प्रेम कि, अपने पुत्र को अपनाने से पुर्व, अपनी प्रजा का मत अवश्य लेते हैं। राजा राम इतने प्रजा वत्सल हो गए कि प्रजा का सारा

राम न केवल प्रजावत्सल थे, बल्कि निर्धनों के धन थे, अनाथों के नाथ थे, दीनों के दीनदयाल थे, निर्बलों के बल थे, निराश्रितों के आश्रय थे, जिनके साथ कोई न था उनका मान और बड़ाई राम ही थे। राम सबके लिए हितकारी थे, सबके लिए उपकारी थे, सबके लिए कल्याणकारी थे, सबके पालनहारी थे, सबके दुख–तापहारी थे। सबके सुख के हेतु थे, परमगति के सेतु थे।

दुख–कष्ट दूर कर दिया, उनके राज्य में कोई दुखी नहीं था, कोई बिमार नहीं था, किसी की मृत्यु नहीं होती थी, किसी की अकाल मृत्यु नहीं होती थी, सब सुखी थे, सभी निर्भय थे। तभी तो आज भी राज्य का मॉडल जब ढूंढ़ा जाता है, तो सबको पुरी दुनियाँ में रामराज्य से अच्छा कोई राज्य नहीं मिलता है। सम्पूर्ण जगत में सत्ता का सर्वोच्च आदर्श रामराज्य ही है।

राम न केवल प्रजावत्सल थे, बल्कि निर्धनों के धन थे, अनाथों के नाथ थे, दीनों के दीनदयाल थे, निर्बलों के बल थे, निराश्रितों के आश्रय थे, जिनके साथ कोई न था उनका मान और बड़ाई राम ही थे। राम सबके लिए हितकारी थे, सबके लिए उपकारी थे, सबके लिए कल्याणकारी थे, सबके पालनहारी थे, सबके दुख–तापहारी थे। सबके सुख के हेतु थे, परमगति के सेतु थे। उनके राज्य में सबको संतोष था, अभिव्यक्ति की पूर्ण आजादी थी, सभी प्रकार की कला, गीत –संगीत, नृत्य–नाट्य इत्यादि को प्रोत्साहन था। प्रकृति मनोरम थी, मानव प्रकृति भी उच्चतम अवस्था में थी। सर्व जनहित, सर्व जन सुखाय की कामना तब से ही आरम्भ हुई संकल्पना प्रतीत होती है।

भारत में कभी भी जातिगत आधार पर समाज का विभाजन नहीं था। पूरा समाज एक शरीर की ही तरह था। जैसे शरीर के किसी भी हिस्से में दर्द होता है, तब पूरा शरीर अस्वस्थ हो जाता है। इसी प्रकार समाज की भी अवधारणा है, समाज का कोई भी हिस्सा वंचित हो जाए, तो सामाजिक एकता की धारणा समाप्त होने लगती है। हमारे देश में जाति आधारित राजनीति के कारण ही समाज में विभाजन के बीजों का अंकुरण किया गया, जो आज एकता की मर्यादाओं को तार–तार कर रहा है। भगवान राम ने अपने वनवास काल में समाज को एकता के सूत्र में पिरोने का काम पूरे कौशल के साथ किया। समाज की संग्रहित शक्ति के कारण ही भगवान राम ने आसुरी प्रवृति पर प्रहार किया। समाज को निर्भयता के साथ जीने का मार्ग प्रशस्त किया। इससे यही शिक्षा मिलती है कि समाज जब एक धारा के साथ प्रवाहित होता है, तो कितनी भी बड़ी बुराई हो, उसे नत मस्तक होना ही पड़ता है। सीधे शब्दों में कहा जाए, तो संगठन में ही शक्ति है। इससे यह संदेश मिलता है कि हम समाज के साथ कदम मिलाकर नहीं चलेंगे, तो हम किसी न किसी रुप में कमजोर होते चले जाएंगे और हमें कोई न कोई दबाता ही चला जाएगा। सम्पूर्ण समाज हमारा अपना परिवार है। कहीं कोई भेदभाव नहीं है। जब इस प्रकार का भाव बढ़ेगा, तो स्वाभाविक रुप से हमें किसी भी व्यक्ति से कोई खतरा भी नहीं होगा। आज समाज में जिस प्रकार के खतरे बढ़ते जा रहे हैं, उसका अधिकांश कारण यही है कि हम समाज का हिस्सा बनने से बहुत दूर हो रहे हैं। अपने जीवन को केवल भाग–दौड़ तक सीमित कर दिया है। यह सच है कि व्यक्ति ही व्यक्ति के काम आता है। यही सांस्कृतिक भारत की अवधारणा है।

murari.shukla@gmail.com

श्री अयोध्या धाम में नवनिर्मित
प्रभु श्रीराम मंदिर ने भारतीय समाज को एक किया है

प्रहलाद सबनानी

22 जनवरी 2024 का दिन भारत के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से लिखा जाएगा, क्योंकि इस दिन श्री अयोध्या धाम में प्रभु श्रीरामलला के विग्रहों की एक भव्य मंदिर में समारोहपूर्वक प्राण–प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई थी। इस प्राण–प्रतिष्ठा कार्यक्रम में पूरे देश से धार्मिक, राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के शीर्ष नेतृत्व तथा समस्त मत, पंथ, सम्प्रदाय के पूजनीय संत–महात्माओं की गरिमामय उपस्थिति रही थी। इससे निश्चित ही यह आभास हुआ है कि प्रभु श्रीराम मंदिर ने भारत में समस्त समाज को एक कर दिया है। यह भारत के पुनरुत्थान के गौरवशाली अध्याय के प्रारम्भ का संकेत माना जा सकता है।

सामान्यतः किसी भी भवन का ढांचा नीचे से ऊपर की ओर जाता दिखाई देता है, परंतु प्रभु श्रीराम मंदिर के बारे में यह कहा जा रहा है कि प्रभु श्रीराम का यह मंदिर जैसे ऊपर से बनकर आया है और पृथ्वी पर स्थापित कर दिया गया है। इस भव्य मंदिर को त्रिभुवन का मंदिर भी कहा जा रहा है। तमिलनाडु के एक बड़े अधिकारी, जो कला के जानकार हैं, का तो यह भी कहना है कि इस प्रकार की नक्काशी से सज्जित मंदिर शायद पिछले 1000 वर्षों में तो बनता हुआ नहीं दिखाई दिया है। इस मंदिर में प्रभु श्रीराम के विग्रहों की प्राण प्रतिष्ठा के समय लगभग समस्त समाज के लोग पूजा सम्पन्न कराने के उद्देश्य से बिठाए गए थे। पूजा सम्पन्न कराने के लिए माननीय पंडितों को देश के लगभग समस्त राज्यों से लाया गया था। देश में लगभग 150 संत–महात्माओं की परम्पराएँ हैं, जैसे गुरु परम्परा, दार्शनिक परम्परा आदि। ऐसी समस्त परम्पराओं के संत–महात्माओं की भागीदारी प्राण प्रतिष्ठा समारोह में रही। साथ ही सामाजिक जीवन के कई क्षेत्रों के प्रमुख नागरिकों की भी इस समारोह में भागीदारी रही, जैसे खेल, साहित्य, लेख, कला, मीडिया, प्रशासन आदि। कुल 18 श्रेणियों के नागरिकों को इस समारोह में भाग लेने हेतु आमंत्रित किया गया था। जिन लगभग 4000 श्रमिकों ने इस मंदिर के निर्माण में अपना योगदान दिया था, उनमें से 600 श्रमिकों, इंजीनियरों एवं सुपरवाइजर आदि की भी इस कार्यक्रम में भागीदारी करवाई गई। 22 जनवरी 2024 के पवित्र दिन श्री अयोध्या धाम के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर 60 चार्टर हवाई जहाज आए थे। कुल मिलाकर व्यवस्थाएँ इतनी अच्छी थीं कि किसी भी नागरिक को श्री अयोध्या धाम में प्रवेश करने में किसी भी प्रकार की कोई कठिनाई नहीं हुई थी। मंदिर परिसर में भी समस्त नागरिकों को अपनत्व लगा था। ऐसा लगा कि स्वर्ग में पहुँच गए हैं एवं मंदिर परिसर में दैवीय अनुभूति हुई। आज भारत एवं अन्य देशों से लगभग 2 लाख श्रद्धालु प्रभु श्रीरामलला के दर्शन हेतु श्री अयोध्या धाम प्रतिदिन पहुँच रहे हैं।

दिनांक 15 से 17 मार्च 2024 को नागपुर में सम्पन्न हुई राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा की बैठक में प्रभु श्रीराम मंदिर के निर्माण पर एक प्रस्ताव पास किया गया है। इस प्रस्ताव में यह कहा गया है कि भारत में सम्पूर्ण समाज हिंदुत्व के भाव से ओतप्रोत होकर अपने "स्व" को जानने तथा उसके आधार पर जीने के लिए तत्पर हो रहा है। अब जब प्रभु श्रीराम के

भव्य मंदिर का निर्माण हो चुका है, अतः अब भारत के समस्त नागरिकों के संदर्भ में अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा का यह सुविचारित मत है कि सम्पूर्ण समाज अपने जीवन में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के आदर्शों को प्रतिष्ठित करने का संकल्प ले, इससे राम मंदिर के पुनर्निर्माण का उद्देश्य सार्थक होगा। प्रभु श्रीराम के जीवन में परिलक्षित त्याग, प्रेम, न्याय, शौर्य, सद्भाव एवं निष्पक्षता आदि धर्म के शाश्वत मूल्यों को आज समाज में पुनः प्रतिष्ठित करना आवश्यक है। सभी प्रकार के परस्पर वैमनस्य और भेदों को समाप्त कर समरसता से युक्त पुरुषार्थी समाज का निर्माण करना ही प्रभु श्रीराम की वास्तविक आराधना होगी। इसी दृष्टि से अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा समस्त भारतीयों का आह्वान करती है कि बंधुत्व भाव से युक्त, कर्तव्यनिष्ठ, मूल्य आधारित और सामाजिक न्याय की सुनिश्चितता करने वाले समर्थ भारत का निर्माण करें, जिसके आधार पर वह एक सर्व कल्याणकारी वैश्विक व्यवस्था का निर्माण करने में अपनी महती भूमिका का निर्वहन कर सकेगा। यदि भारतीय समाज एक होगा, तो भारत को पुनः एक बार विश्व गुरु के रूप में प्रतिष्ठित करने में आसानी होगी।

श्री अयोध्या धाम में नव निर्मित प्रभु श्रीराम मंदिर ने न केवल भारतीय समाज को एक किया है, बल्कि इससे भारत की आर्थिक प्रगति में चार चांद लग रहे हैं। देश में धार्मिक पर्यटन की जैसे बाढ़ ही आ गई है। न केवल भारतीय नागरिक बल्कि अन्य देशों में रह रहे भारतीय मूल के लोग भी प्रभु श्री राम के दर्शन करने हेतु श्री अयोध्या धाम पहुँच रहे हैं। इससे स्थानीय स्तर पर रोजगार के लाखों नए अवसर विकसित हो रहे हैं। भारतीय समाज में एकरसता आने से भारत में मनाए जाने वाले विभिन्न त्योहारों को भी बहुत ही उत्साह के साथ मनाया जा रहा है, जिससे आपस में भाईचारा बढ़ता दिखाई दे रहा है। यदि माँ भारती को विश्व गुरु बनाना है, तो भारत में निवास कर रहे समस्त नागरिकों में एकजुटता स्थापित करनी ही होगी। भारत में मजबूत राजनीतिक स्थिति, मजबूत लोकतंत्र, मजबूत सामाजिक स्थिति,

मजबूत सांस्कृतिक धरोहर होने के चलते विश्व के अन्य देशों का भारतीय सनातन संस्कृति पर विश्वास बढ़ रहा है, जिसे भारत के वैश्विक स्तर पर पुनरुत्थान के रूप में देखा जा सकता है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के परम पूज्य सर संघचालक श्री मोहन भागवत जी भी अपने एक उदबोधन में कहते हैं कि राम राज्य के सामान्य नागरिकों का जो वर्णन शास्त्रों में मिलता है, उसी का आचरण आज हमें करना चाहिए, क्योंकि हम भी इस गौरवमय भारतवर्ष की संतानें हैं। आज हमें राम राज्य के समय नागरिकों द्वारा किए जाने वाले आचरण को अपनाने हेतु तप करना पड़ेगा, हमको समस्त प्रकार के कलह को विदाई देनी पड़ेगी। समाज में आपस में अलग–अलग मत हो सकते हैं, छोटे–छोटे विवाद हो सकते हैं, इन्हें लेकर आपस में लड़ाई करने की आदत छोड़ देनी पड़ेगी। राम राज्य के समय नागरिकों में अहंकार नहीं हुआ करता था, वे बगैर अहंकार के आपस में मिल–जुलकर काम करते थे। श्रीमद् भागवत गीता में बताया गया है कि जिन चार मूल्यों की चौखट पर धर्म का निवास रहता है, वे चार मूल्य हैं–सत्य, करुणा, सुचिता और तपस। राम राज्य में इन मूल्यों का अनुपालन नागरिकों द्वारा किया जाता था।

श्री भागवत जी आगे कहते हैं कि आज की परिस्थितियों के बीच नागरिकों द्वारा आपस में समन्वय रखकर व्यवहार करना यह धर्म का ही प्रथम पायदान है। दूसरा कदम माना जाता है धर्म का आचरण अर्थात सेवा और परोपकार करना। केंद्र सरकार एवं अन्य कई राज्य सरकारों द्वारा चलाई जा रही कई योजनाएँ गरीबों को राहत दे रही हैं। आज इस संदर्भ में सब कुछ हो रहा है लेकिन भारत के नागरिक होने के नाते हमारा भी तो कुछ कर्तव्य है। इस समाज में जहाँ दुःख दिखाई दे, पीड़ा दिखाई दे, वहाँ हम दौड़ कर सेवा करने पहुँचें, यह सभी हमारे अपने बंधु ही तो हैं। हमारे शास्त्रों में वर्णन मिलता है कि दोनों हाथों से कमाएँ जरूर, परंतु अपने लिए न्यूनतम आवश्यक राशि रखकर शेष सारा पैसा सेवा और परोपकार के माध्यम से समाज को वापिस कर दें। सुचिता पर चलना यानी पवित्रता होनी चाहिए और पवित्रता के लिए संयम होना चाहिए। लोभ नहीं करना, संयम में रहना और शासन द्वारा निर्धारित नियमों का पालन करना, अपने जीवन में अनुशासित रहना, अपने कुटुंब को अनुशासन में रखना, अपने समाज में अनुशासन में रहना तथा सामाजिक जीवन में नागरिक अनुशासन का पालन करना आदि कुछ ऐसे नियम हैं, जिनके अनुपालन से भारत को वैश्विक स्तर पर एक अलग पहचान दिलाई जा सकती है।

prahlad.sabnani@gmail.com

जब प्रभु राम सबके हैं तो जातिगत द्वेष क्यों, मतदाता समझदार एवं सजग बने

दिव्य अग्रवाल

सम्पूर्ण विश्व जानता है कि सैकड़ों वर्षों की तपस्या, त्याग, बलिदान और साधना के पश्चात प्रभु श्री राम के मंदिर का भव्य निर्माण श्री अयोध्या धाम में हुआ है। जिसको अगर राजनीतिक रूप से देखा जाए, तो भाजपा ही एकमात्र राजनितिक दल था, जिसका मुख्य उद्देश्य ही प्रभु का मंदिर निर्माण करवाना था। यह स्वप्न सच भी भाजपा की ही सरकार में हुआ और हिन्दुओं के मताधिकार से भाजपा सत्ता में आयी, इसमें भी कोई संदेह नहीं। जातियों में बंटा समाज जब एक हुआ, जातिगत राजनीति को त्याग कर भाजपा को सत्ता सौंपी, तब भाजपा ने भी अपने वादे को पूर्ण कर हिन्दू समाज की भावनाओं का पूर्ण सम्मान रखा। इन सबके पश्चात आज कुछ नेता जातिगत राजनीति कर भाजपा का नुकसान करने पर आतुर हैं, जबकि यह नुकसान भाजपा से अधिक सनातन का होगा, राष्ट्र का होगा। आप सोचिए, जब पुराने लोकसभा चुनाव में टिकट वितरण हुआ था, तो प्रत्याशी को जो मत मिले थे, वो किसी एक जाति के आधार पर नहीं थे, अपितु राष्ट्र निर्माण के नाम पर थे। पूर्व

में जब उन जातियों को भाजपा द्वारा टिकट वितरण किया गया था, जिसमें कुछ लोग आज भाजपा का विरोध, कुछ चंद लोगों द्वारा भ्रमित होने पर कर रहे हैं, तो अन्य समाज के लोगों को कोई नाराजगी नहीं थी। तन, मन, धन तीनों प्रकार से सभी समाज के लोगों ने सहयोग कर, भाजपा प्रत्याशी को विजयी कर लोकसभा में भेजकर, राष्ट्रवादी विचारधारा को मजबूत कर, मोदी जी को शक्ति प्रदान की थी। अतः यदि कुछ टिकटों के वितरण में बदलाव हुआ है, तो इसको जातिगत भेदभाव या सामाजिक द्वेष भावना से नहीं देखना चाहिए। प्रत्याशी किसी भी जाति का हो, देश को पूर्व की भांति ही मोदी सरकार को सामर्थ्य प्रदान कर, राष्ट्र व सनातन को बल देना चाहिए। क्योंकि यह निश्चित मानिए कि प्रभु राम मंदिर का उत्सव विपक्षी राजनीतिक दृष्टिकोण को न पहले स्वीकार था, न अब है और न ही भविष्य में होगा, तो सोचना सभ्य समाज को है कि उन्हें राष्ट्र से प्रेम है, या जातिगत विष से, जिसको पीने से पोषण नहीं पतन ही होता है।

divyelekh@gmail.com

विहिप-सेवा विभाग द्वारा पहली बार मेहंदी प्रशिक्षण केंद्र का शुभारंभ

विश्व हिन्दू परिषद, सेवा विभाग द्वारा पटना में पहली बार मेहंदी प्रशिक्षण केंद्र का शुभारंभ, पटना स्थित आशोपुर में किया गया। विश्व हिंदू परिषद के क्षेत्र मंत्री माननीय वीरेंद्र विमल जी ने दीप प्रज्जवलित कर आरम्भ किया तथा प्रान्त सहमंत्री सन्तोष जी ने नारियल फोड़ कर केंद्र का उद्घाटन किया। बहनों को सम्बोधित करते हुए क्षेत्र मंत्री वीरेंद्र विमल जी ने कहा कि हिन्दू पर्व त्योहारों में मेहंदी कढ़ाई के क्षेत्र में दुर्गावहिनी की बहनें आने वाले समय मे महती भूमिका निभाएंगी। इस वर्ष विश्व हिंदू परिषद द्वारा पटना में सैकड़ों बहनों को मेहंदी लगाने का प्रशिक्षण देकर उन्हें स्वावलंबी बनाएगी। समाजसेवी श्रीमती पायल सिंह ने बताया कि पटना की बहनों के लिए ये अच्छा विकल्प होगा। इससे आनेवाले समय में रोजगार भी बढ़ेंगे। कार्यक्रम में मातृशक्ति जिला संयोजिका श्रीमती नीलम पाल, पिंकी कुमारी, प्रिया कुमारी व नेहा कुमारी समेत अनेक बहनें उपस्थित थी।

क्या है एक्स मुस्लिम मूवमेंट, जिसके चलते लोग छोड़ रहे इस्लाम; भारत समेत इन देशों में आंदोलन तेज

भारत, अमेरिका, ब्रिटेन समेत दुनियाँ के कई देशों में एक्स–मुस्लिम मूवमेंट तेजी से बढ़ रहा है। इसके तहत खुद को मुसलमान कहने वाले लोग तेजी से अपना मजहब छोड़ रहे हैं। इसकी कुछ वजहें भी उन्होंने बताई हैं। धर्म या मजहब हम खुद नहीं चुनते, बल्कि जन्मजात मिलता है। ऐसे में यदि कोई उस धार्मिक पहचान से खुद को अलग करता है, तो यह आसान नहीं होता। लेकिन दुनियाँ भर में इस्लाम को मानने वाले कुछ लोग ऐसे हैं, जो इस मजहब से मुँह मोड़ रहे हैं। यही नहीं इसे एक आंदोलन का नाम दे दिया गया है और वे इसे एक्स–मुस्लिम मूवमेंट कहते हैं। भारत, अमेरिका, ब्रिटेन जैसे देशों के अलावा कई मुस्लिम बहुल देशों में भी इस तरह का आंदोलन जोर पकड़ रहा है। इन लोगों का कहना है कि हम मानते हैं कि इस्लाम की कुछ चीजें ठीक नहीं हैं और ऐसे में हम उस मजहब का पालन नहीं कर सकते।

इस्लाम को छोड़ने वाली केरल की 48 साल की नूरजहाँ ने भी ऐसे ही कारण बताए हैं। उन्होंने टाइम्स ऑफ इंडिया से बातचीत में बताया था कि हिजाब पहनने की मजबूरी, महिलाओं से भेदभाव और मजहब के नाम पर कट्टरता जैसी चीजों ने उनका इस्लाम से मोहभंग कर दिया। फिर वह नास्तिकता की ओर बढ़ीं, क्योंकि यह चीज उन्हें ज्यादा तार्किक लगती हैं। नूरजहाँ ने कहा था, 'बीते कुछ सालों में मैंने इस्लाम से नाता तोड़ लिया है। ऐसा इसलिए, क्योंकि इसकी कुछ बातें मुझे अतार्किक लगती हैं। इसमें महिलाओं से भेदभाव होता है और उन्हें दोयम दर्जे का माना जाता है।' वह कहती हैं कि मेरी बेटियाँ हैं और मैं उन्हें किसी भी धर्म की शिक्षा नहीं दे रही हूँ। बता दें कि यह एक्स–मुस्लिम मूवमेंट ऐसे समय में जोर पकड़ रहा है, जब कहा जा रहा है कि अगले 10 सालों में पूरी दुनियाँ में सबसे ज्यादा सँख्या इस्लाम को मानने वालों की होगी। प्यू रिसर्च सेंटर की ही एक रिपोर्ट में 2035 तक दुनियाँ में सबसे ज्यादा मुसलमान होने की बात कही गई है। 2017 की प्यू रिसर्च सेंटर की रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका में 35 लाख मुसलमान हैं, लेकिन इनमें से 1 लाख हर साल इस्लाम छोड़ रहे हैं। हालांकि इतने ही लोग ऐसे भी हैं, जो हर साल इस्लाम को अपना रहे हैं। ऐसी ही स्थिति पश्चिमी यूरोप के देशों में भी देखी जा रही है।

(Livehindustan से साभार)

इंटरनेट इस्लाम के लिए वैसा ही है, जैसे ईसाईयत के लिए प्रेस थी

इस्लाम से दूरी बनाने वाले लोगों में एक वर्ग उनका भी है, जो किसी और धर्म से इसमें आए थे। हालांकि यह दिलचस्प है कि जैसे हिंदू, ईसाई और अन्य धर्मों को छोड़ने वाले लोग खुद को नास्तिक कहते हैं, वैसा इस्लाम को छोड़ने वाले नहीं कहते। ये लोग अपनी अलग ही पहचान बना रहे हैं और खुद को एक्स–मुस्लिम, यानी पूर्व मुसलमान कह रहे हैं। ईरानी मूल के लेखक और राइट्स ऐक्टिविस्ट मरियम नमाजी कहते हैं कि इसकी वजह इंटरनेट के जरिए तेजी से सूचनाओं का पहुँचना भी है। वह तो कहते हैं कि जैसे प्रिंटिंग प्रेस आने से ईसाईयत पर असर पड़ा था। उसी तरह इंटरनेट का असर इस्लाम पर होगा।

त्याग का स्वरूप

आचार्य राघवेंद्र दास

हिंदू दर्शन त्याग के संबंध में बाह्य और आभ्यंतर की बात करता है। हमारे यहाँ त्याग का त्याग भी कहा गया है, इस त्याग की ही महिमा है। पौराणिक आख्यानों में ऐसे कई आख्यान मिलते हैं, जिनमें त्याग का अभिमान करने वालों की अवनति हुई है। त्याग का भी त्याग वस्तुतः कर्ताभाव का त्याग है, व्यष्टि से समष्टि दृष्टि–श्रीमद्भगवद् गीता में समस्त प्रकृति को ही त्रिगुणात्मक कहा गया है, जिससे वह स्वयं को कर्त्ता समझने लगता है–

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः।
अहंकारविमूढात्मा कर्ताऽहमिति मन्यते।। (3.27)

अर्थात सत्त्व, रजस् और तमस् इन तीनों गुणों की जो साम्यावस्था है, उसका नाम प्रधान या प्रकृति है, उस प्रकृति के गुणों से अर्थात् कार्य और करणरूप समस्त विकारों से लौकिक और शास्त्रीय सम्पूर्ण कर्म सब प्रकार से किये जाते हैं। परंतु विमूढात्मा कार्य और करण के संघातरूप शरीर में आत्मभाव की प्रतीति का नाम अहंकार है, उस अहंकार से जिसका अन्तःकरण अनेक प्रकार से मोहित हो चुका है, ऐसा देहेन्द्रिय के धर्म को अपना धर्म मानने वाला देहाभिमानी पुरुष अविद्यावश प्रकृति के कर्मों को अपने में मानता हुआ उन–उन कर्मों का मैं कर्ता हूँ, ऐसा मान बैठता है।

इस अहंपन के कारण ही वह त्याग का भी अभिमान कर बैठता है। जिस त्याग की नाव पर चढ़ शांति और मोक्षादि प्राप्त किया जा सकता है, वह अभिमान होने पर दुष्करता का कारण भी बन सकता है। और जो 'असक्तबुद्धिः' का लक्षण शास्त्रों में विहित है, वह लक्षण भी नहीं घट पाता। अहंकार सत्य को स्वीकारने में यक्ष अवरोधक है।

श्रीमद्भगवद् गीता के ही अट्ठारहवें अध्याय में कर्ता के तीन प्रकार बतलाए गए हैं। त्याग का भी त्याग ही सत्त्व त्याग है। सत्त्व में स्थित व्यक्ति का समस्त कर्म लोक मंगल कारक होता है। गणेश गीता ऐसे ही त्याग का भी त्याग करने वाले लोगों के लिए कहती है–

निरीहो निगृहीतात्मा परित्यक्तपरिग्रहः।
केवलं वै गृहं क्रमाचरन्नायति पातकम्।।
(गणेश गीता 3.27)

अर्थात जो इच्छारहित, आत्मजित् और सम्पूर्ण परिग्रह का परित्याग किये हैं, ऐसे प्राणी यदि घर में रहकर भी कर्म करें, तो उन्हें कुछ पातक नहीं लगता। मनीषियों ने त्याग को कई श्रेणियों में रखा है। यहाँ कुछ मुख्य वर्गीकृत लक्षणों को उद्धृत कर रहा हूँ–

1. **शास्त्रीय निषिद्ध कर्मों का सर्वथा त्याग** – चोरी, व्यभिचार, मिथ्या भाषण, कपट, छल, बलात्, अभक्ष्य–खाद्य, प्रमाद और शास्त्र विरुद्ध कर्मों का त्रिविध (मन, वाणी और कर्म) त्याग।
2. **काम्य कर्मों का त्याग** – स्त्री, पुत्र, वित्त प्रभृति प्राप्त्यर्थ

ही यज्ञ, दान, तप व उपासनादि सकाम कर्मों का व्यष्टिगत दृष्टि से ही न करना, लोक संग्रह की दृष्टि से करना।

3. **तृष्णा का सर्वथा अभाव** – मान, बड़ाई, प्रतिष्ठा और स्त्री, पुत्र और धनादि अनित्य पदार्थों की प्रारब्धानुसार प्राप्ति में तुष्ट होना और इनके बढ़ने की इच्छा को आत्म साक्षात्कार में बाधक समझ, उसका त्याग करना।
4. **स्वार्थ के लिए दूसरों से सेवा कराने का त्याग** – अपने सुख के लिए किसी से भी धनादि पदार्थों की, अथवा, सेवा कराने की याचना करना। यहाँ एक बात ध्यान रखने योग्य है कि अशक्य के लिए यह लागू नहीं है।
5. **समस्त कर्तव्य कर्मों में आलस्य और फल की इच्छा का सर्वथा त्याग** – ईश्वर की भक्ति, देवताओं की उपासना–पूजा, माता–पितादि गुरुजनों की सेवा, यज्ञ, दान, तप और शास्त्र–निर्दिष्ट नियमानुसार आजीविका का निर्वाह और शरीर सम्बन्धी खान–पान प्रभृति जितने कर्तव्यकर्म हैं, सब में आलस्य का और सर्वतोभावेन कामना का त्याग करना।
6. **ममता और आसक्ति का सर्वथा त्याग** – धन, भवन और वस्त्रादि सम्पूर्ण वस्तुएँ और स्त्री, पुत्र और मित्रादि सम्पूर्ण बांधवजन एवं मान–बड़ाई और प्रतिष्ठा प्रभृति इहलोक व परलोक के जितने भी विषय भोगरूप पदार्थ हैं, उन सबको क्षणभंगुर और नाशवान होने के कारण अनित्य समझकर ममता और आसक्ति का त्याग और केवल आत्मस्थ होने के लिए अनन्यभाव से मन, वाणी और कर्म द्वारा होने वाली क्रियाओं में और शरीर में भी ममता और आसक्ति का त्याग।
7. **सूक्ष्म वासना और अहंभाव का सर्वथा त्याग** – सभी पदार्थों की अनित्यता शास्त्र–सिद्ध है। सच्चिदानन्द परमात्मा ही सर्वत्र संभव से परिपूर्ण हैं। ऐसा दृढ़ निश्चय कर शरीरसहित संसार के सम्पूर्ण पदार्थों में सम्पूर्ण कर्मों में सूक्ष्म वासना का सर्वथा अभाव हो जाना अर्थात् अन्तः करण में उन चित्रों का संस्कार रूप में भी न रहना और शरीर में अहंभाव का सर्वथा अभाव होकर मन, वाणी और शरीर द्वारा होनेवाले सम्पूर्ण कर्मों में कर्तापन के अभिमान का लेशमात्र भी न रहना।

त्याग का भी त्याग करने वाला साधक हिन्दू दर्शन में महनीय है। ऐसे लोगों के लिए ही "महामुनि अष्टावक्र" कहते हैं–

सर्वारम्भेषु निष्कामो यश्चरेद् बालवन्मुनिः।
न लेपसतस्य शुद्धस्य क्रियमाणेपि कर्मणि।।

अर्थात जो साधक सभी कामों में बालक के सामान निष्काम व्यवहार करता है, वह शुद्ध है। और वह कर्म करने पर भी लिप्त नहीं होता।

मातृ-शक्ति दुर्गावाहिनी का एक दिवसीय प्रशिक्षण वर्ग

दिनांक 31 3.2024 को नक्षत्र गेस्ट हाउस में (इस्कॉन मंदिर के सामने) विश्व हिंदू परिषद मातृ शक्ति, दुर्गावाहिनी का एक दिवसीय प्रशिक्षण वर्ग आयोजित किया गया, प्रातः 9.00 बजे इस वर्ग के उद्घाटन भाषण में प्रसिद्ध चिकित्सक एवं विश्व हिंदू परिषद के पूर्व केंद्रीय अध्यक्ष पद्मश्री डॉ आर एन सिंह ने कहा कि हम सभी 15 से 35 वर्ष की हिंदू युवतियाँ दुर्गावाहिनी और 35 से ऊपर की मातृ शक्ति कहलाती हैं, जो विश्व हिंदू परिषद के ही आयाम हैं, के प्रशिक्षण वर्ग में यहाँ प्रशिक्षण लेने के लिए आए हैं। इसमें संयोजिका, शक्ति साधना केंद्र प्रमुख, संस्कार केंद्र प्रमुख एवं इस टोली के कम से कम 5 सदस्य की टीम खड़ी करनी है। इसी प्रकार से मातृशक्ति की भी टोली में संयोजिका, सत्संग प्रमुख, संपर्क प्रमुख, संस्कार केंद्र प्रमुख, सेवा प्रमुख एवं टोली के पाँच सदस्य का संगठन करना है और संगठन में बहनों को करना क्या है। इस विषय पर उन्होंने विस्तार से प्रकाश

डालते हुए कहा कि यहाँ भारतीय समाज का प्राण धर्म में बसता है, यहाँ हर एक बात धर्म की परिभाषा में कही गई है। पितृ धर्म, पुत्र धर्म, पति धर्म, पत्नी धर्म, राज धर्म और इसमें विश्व हिंदू परिषद ने जोड़ा है, राष्ट्रधर्म। इस राष्ट्रधर्म के नाते हमारे जो–जो कर्तव्य हैं, वह आज के इस एक दिवसीय प्रशिक्षण वर्ग में भिन्न वक्ताओं ने प्रकाश डाला। उसमें मातृ शक्ति की क्षेत्र संयोजिका डॉक्टर शोभा रानी सिंह जी, पटना क्षेत्र के मंत्री श्री विमल जी, प्रांत संगठन मंत्री श्री चितरंजन जी, प्रांत के सह मंत्री श्री संतोष जी, महानगर पटना की दुर्गा वाहिनी की संयोजिका अंजली सिंह उपस्थित रहे। प्रांत की संयोजिका पिंकी कुमारी कार्यक्रम का संचालन कर रही थीं। समापन सत्र में प्रांत मंत्री परशुराम जी ने आज हिंदू बालिकाओं के बीच असामाजिक तत्वों द्वारा चलाए गए लव जिहाद के बारे में पूरा विस्तार से बताया और हिंदू समाज की सुरक्षा के लिए हम कैसे कटिबध हों, इस विषय पर प्रकाश डाला। देव भक्ति एवं देश भक्ति दोनों का साथ–साथ जागरण हो, यह आज की आवश्यकता है, इसलिए हिंदू समाज की सुरक्षा के लिए, सबके लिए शक्ति साधना केंद्र, संस्कार केंद्र एवं सत्संग आवश्यक है। धर्म के जो 10 लक्षण हैं, इनके गुणों का समावेश हमारे अंदर हो, धर्म के आधार पर प्रत्येक व्यक्ति को संस्कारित करने का साधन है, सत्संग और यह आज की आवश्यकता है। यह एक दिवसीय कार्यक्रम जयघोष के साथ सम्पन्न हुआ।

भारतीय संस्कृति में केसर का स्थायी महत्व

डॉ. आनंद मोहन
सहयोगी - आकांक्षा शुक्ला, सबरीन बशीर, अग्रताबेन वधेल, आलोक मोहन

केसर, अपने जीवंत रंग, मनोरम सुगंध और असँख्य उपयोगों के लिए पोषित रहस्यमय बूटी, भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता में एक अमिट स्थान रखती है। अपने दुर्लभ आकर्षण से परे, केसर हिंदू धर्म, ज्योतिष और धार्मिक प्रथाओं में अपने प्रतीकात्मक महत्व के लिए पूजनीय है, जहाँ इसे दिव्य आशीर्वाद का आह्वान करने और समृद्धि को बढ़ावा देने के लिए एक मार्ग के रूप में माना जाता है। पाक कला के क्षेत्र में, केसर एक प्रतिष्ठित घटक के रूप में सर्वोच्च स्थान रखता है, जो व्यंजनों में अपना विशिष्ट स्वाद और रंग देता है। भारतीय पद्धत्ति की विभिन्न मिठाइयों में केसर की सूक्ष्म लेकिन उदात्त उपस्थिति गैस्ट्रोनॉमिक कृतियों को संवेदी आनंद की नई ऊंचाइयों तक ले जाती है।

केसर, जिसे भारतीय मसालों के स्वर्ण खजाने के रूप में जाना जाता है, धार्मिक अनुष्ठानों और प्रथाओं में केंद्रीय भूमिका निभाने के लिए श्रेष्ठ आनंद से परे है। इसकी सुस्वाद सुगंध और जीवंत रंग यज्ञ, पूजा, दिवाली और जन्माष्टमी जैसे त्योहारों सहित विभिन्न समारोहों में पवित्रता का संचार करता है। पवित्र अग्नि में केसरिया की आहुति देने का कार्य पवित्रता का प्रतीक है, जबकि देवताओं और भक्तों के माथे पर इसका प्रयोग आशीर्वाद और सुरक्षा का प्रतीक है। इसके अतिरिक्त, केसर से मिश्रित दूध, जीवनी शक्ति और कल्याण के लिए एक टॉनिक के रूप में सम्मानित, भारतीय संस्कृति में श्रेष्ठ और अनुष्ठानिक श्रद्धा के संलयन का प्रतीक है।

हिंदू धर्म के पूर्ववर्ती से परे, केसर विविध धार्मिक परंपराओं में व्याप्त है, जो ज्ञान, मोक्ष और आध्यात्मिक मुक्ति का प्रतीक है। बौद्ध धर्म में, यह जन्म और मृत्यु के चक्र से मोक्ष या मुक्ति प्राप्त करने के लिए एक पुरक के रूप में कार्य करता है। इसी तरह, सिख धर्म में, भगवा रंग अन्याय के खिलाफ लचीलापन और अवज्ञा के लोकाचार का प्रतीक है। भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता के जटिल चित्रपट में, केसर पवित्रता, समृद्धि और आध्यात्मिक उत्थान के प्रतीक के रूप में खड़ा है। अपने पाक कौशल से लेकर अपने खगोलीय महत्व तक, केसर दिव्य आशीर्वाद और लौकिक सद्भाव के सार को मूर्त रूप देने के लिए सांसारिक लोकों से परे है।

ज्योतिष के लौकिक क्षेत्र में, केसर बृहस्पति ग्रह से जुड़ी एक खगोलीय इकाई के रूप में उभरता है, जो शुभता और दिव्य कृपा का प्रतीक है। यंत्रों और आध्यात्मिक प्रथाओं में इसका समावेश, इसके शुद्ध सार में विश्वास को दर्शाता है, जो आकाशीय शक्तियों को खुश करने और सकारात्मक ऊर्जा को प्रसारित करने में सक्षम है। इसके अलावा, केसर की प्रतीकात्मक प्रतिध्वनि त्रिक चक्र तक फैली हुई है, जहाँ यह महत्वपूर्ण ऊर्जाओं को संतुलित करने और समग्र स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में अपनी भूमिका के लिए सम्मानित है।

कश्मीर की उपजाऊ भूमि में खेती की जाने वाली केसर की प्राचीन उत्पत्ति, इसकी शुद्धता और प्रीमियम गुणवत्ता को रेखांकित करती है। श्रद्धेय कश्मीरी मोंगरा केसर, जिसे रसायनी जैसे पारखी लोगों द्वारा सावधानीपूर्वक प्राप्त किया जाता है, प्रामाणिकता और उत्कृष्टता का

प्रतीक है। एंटीऑक्सीडेंट गुणों और एक समृद्ध सुगंध के साथ धन्य, यह केसर न केवल पाक प्रयासों को समृद्ध करता है, बल्कि असँख्य स्वास्थ्य लाभ भी प्रदान करता है, जिसमें प्रतिरक्षा को मजबूत करने से लेकर संज्ञानात्मक कौशल शक्ति को बढ़ाने तक शामिल हैं। इसका प्राचीन सार शुद्धता, समृद्धि और समग्र कल्याण के सार को समाहित करता है।

अपने आध्यात्मिक और पाक महत्व से परे, केसर सांस्कृतिक पहचान और एकता के एक शक्तिशाली प्रतीक के रूप में कार्य करता है, जो भारतीय विरासत का एक पोषित प्रतीक बनने के लिए धार्मिक सीमाओं को पार करता है। इसका जीवंत रंग हिंदू भिक्षुओं, सिख गुरुओं और बौद्ध चिकित्सकों की पोशाक को सुशोभित करता है, जो ज्ञान और आध्यात्मिक पूर्ति के लिए एक साझा खोज का प्रतीक है। इसके अलावा, धार्मिक समारोहों और त्योहारों में भगवा की उपस्थिति विभिन्न धर्मों के भक्तों को एकजुट करती है, सांप्रदायिक सद्भाव और परमात्मा के लिए सामूहिक श्रद्धा की भावना को बढ़ावा देती है। केसर–मिश्रित दूध के रूप में सेवन किया जाए, या हर्बल उपचार में शामिल किया जाए, यह सुनहरी बूटी पारंपरिक चिकित्सा की आधारशिला बना हुआ है, जो बीमारियों के लिए एक प्राकृतिक मारक क्षमता प्रदान करता है।

औषधीय गतिविधियाँ

एंटी अल्जाइमर – मुख्य कैरोटीनॉयड घटक, ट्रांस–क्रोसिन–4, अल्जाइमर रोग के इलाज में उपयोगी होते हैं।

एंटी–टसिव गतिविधि – केसर के घटक सफरानल, गिनी प्रजातियाँ में खांसी को कम करने में सफल पाया गया है और इसका प्रयोग विभिन्न प्रकर की दवाईयों में करने के लिए प्रयोग चल रहे हैं।

हाइपोलिपिडेमिक गतिविधि – क्रोसिन, केसर के घटकों में से एक ने आहार–प्रेरित उच्च कोलेस्ट्रॉल एवम अत्यधिक वसा की स्थिति को कम करने में सफल पाया गया है।

मिर्गी एवम दौरे के खिलाफ गतिविधि – विभिन्न प्रकार के चूहों में केसर के घटक सफरानल द्वारा मिर्गी एवम दौरे

के खिलाफ सशक्त गतिविधि पाई गई, जो कि विभिन्न प्रकार के प्रयोगों के द्वार साबित हुई है। विभिन्न प्रकार के त्वचा रोगों में केसर काफी प्रभावी माना गया है। त्वचा की सूजन, इचिथोसिस वल्गरिस नामक जेनेटिक बिमारी, जिसमें त्वचा का सुखापन होता है, उसके केसर के लेपों द्वारा इलाज काफी प्रभावी माना गया है।

विभिन्न दर्द निवारक एवं सूजन रोधी गतिविधि – केसर के वर्तिकार्ग और पंखुड़ियों के जलीय और एथेनॉलिक अर्क में दर्द निवारक एवं सूजन रोधी दोनों प्रकार की क्षमता पायी गयी हैं। इसके अलावा विभिन्न प्रकार के एडिमा रोगों में जो कि प्रयोगशाला के चूहों में किये गये थे, इसको सफल पाया गया एवं प्रमाणित किया गया कि ये सफल प्रभाव प्रदान करता है।

एंटीऑक्सिडेंट गतिविधि – केसर के घटकों जैसे कि सफरानल, क्रोसिन आदि की अद्वितीय और शक्तिशाली एंटीऑक्सिडेंट गतिविधि की सूचना मिली थी, जो उम्र से संबंधित विकारों के इलाज के लिए कॉस्मेटिक के रूप में एवं खाद्य पूरक आदि के रूप में इसका उपयोग करने का सुझाव देते है।

जीनोटॉक्सिसिटी से सुरक्षा – केसर का जलीय अर्क विभिन्न प्रकार के मानव निर्मित रसायनों के प्रयोग से होनी वाली जीनोटॉक्सिसिटी को रोकने के लिए सक्षम पाया जाता है।

कार्डियोप्रोटेक्शन – क्रोसेटिन, केसर का मुख्य सक्रिय घटक, कार्डियक मार्कर के स्तर को कम करने के लिए पाया गया था – लैक्टेट डिहाइड्रोजनेज गतिविधि इसकी कार्डियोप्रोटेक्टिव कार्रवाई का सुझाव देती है।

मधुमेह विरोधी गतिविधि – क्रोसेटिन, केसर का सक्रिय घटक मधुमेह विरोधी गतिविधि मैं सक्षम पाया गया है, जा की चुहों पर विभिन्न प्रकार के प्रयोग द्वार साबित किया गया है।

विभिन्न प्रकार के प्रयोगों से जो कि चूहों पर किये गये हैं, ये साबित होता है कि केसर के घटक एवं केसर के जलिये वा इथेनॉल अर्क अन्य विभिन्न प्रकार की बीमारियों की रोक्थाम में काफी सफल हुए हैं। इन बीमारियों में मुख्य रोग है श्वसन संबंधी विकार, रेटिना फंक्शन विकार, पार्किंसंस विकार, अत्याधिक रक्तचाप, अवसाद, महिला सम्बंधित बीमारियाँ (ल्यूकोरिया और हिस्टीरिया), ट्यूमर, रक्तस्राव आदि। अपने अनुष्ठानिक और पाक अनुप्रयोगों के अलावा, केसर औषधीय उपयोग की एक समृद्ध विरासत समेटे हुए है, जो अपने चिकित्सीय गुणों और समग्र उपचार लाभों के लिए प्रतिष्ठित है। प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रंथों से लेकर आधुनिक चिकित्सा अनुसंधान तक, केसर को प्रतिरक्षा बढ़ाने, तनाव कम करने और समग्र कल्याण को बढ़ावा देने की क्षमता के लिए सराहा गया है।

सत्यानाशी का पौधा

इसे कंटकारी, कनक और रंगैनी भी कहा जाता है। इस पौधे को जड़ समेत कच्चा खा जाइए ! दिखने में छोटा होता है, लेकिन यह देशी दवाओं की फैक्ट्री है, इसके हर हिस्से में छिपे हैं कई औषधीय गुण।

1. सत्यानाशी के पौधे को देशी दवाओं का कारखाना माना जा सकता है। इस पौधे के पत्ते, फूल, तना और यहाँ तक कि जड़ों का उपयोग भी कई रोगों से छुटकारा दिलाने में सदियों से किया जाता रहा है। आधुनिक शोधों में भी इस चमत्कारी पौधे के लाभों पर मुहर लग चुकी है।

2. आयुर्वेद में सभी रोगों के उपचार के लिए जड़ी–बूटियों का उपयोग किया जाता है। हमारे आस–पास पाए जाने वाले पेड़–पौधों में औषधीय गुण होते हैं, जो स्वास्थ्य के लिए चमत्कारी साबित हो सकते हैं। इसी तरह का एक औषधीय गुणों से भरपूर पौधा है सत्यानाशी। इस पौधे को देशी दवाओं का खजाना माना जा सकता है।

3. नेशनल सेंटर फॉर बायोटेक्नोलॉजी इन्फॉर्मेशन (NCBI) की रिपोर्ट के अनुसार सत्यानाशी का पौधा कई संक्रामक बीमारियों से बचाने में बहुत प्रभावी हो सकता है। इस पौधे में अनगिनत औषधीय गुण हैं, जो कई तरह के संक्रमण और मेटाबॉलिक डिसऑर्डर से छुटकारा दिला सकती हैं।

4. आपको जानकर हैरानी होगी कि कई लोक चिकित्साओं में कैंसर के इलाज के लिए इस पौधे का इस्तेमाल किया जाता रहा है। इसका उपयोग ओरल कैविटी इंफेक्शन में भी किया जाता है। इसके तने और पत्तियों से ठंडा जलीय और मेथनॉलिक अर्क तैयार किया जाता है।

5. कई रिसर्च में पता चला है कि इस पौधे के तने और पत्तियों के अर्क में बहुत शक्तिशाली एंटीफंगल और एंटीकैंसर गुण होते हैं। कई आयुर्वेद एक्सपर्ट्स का दावा है कि कैंसर और एचआईवी एड्स से बचाने में भी यह पौधा प्रभावी साबित हो सकता है। आमतौर पर सत्यानाशी का पौधा महाराष्ट्र के मराठवाड़ा की उजाड़ भूमि पर पाया जाता है।

6. आयुर्वेद में लगभग 2000 साल पहले से सत्यानाशी का पौधा उपचार के लिए उपयोग किया जा रहा है। इस औषधीय पौधे में एल्कलॉइड, फ्लेवोनोइड, ग्लाइकोसाइड, टेरपेनोइड और फेनोलिक्स जैसे माध्यमिक मेटाबोलाइट्स भी पाए जाते हैं। इसका अर्क पुराने से पुराने रोगों के उपचार में प्रभावी हो सकता है।

कई शोधों में यह भी पाया गया है कि सत्यानाशी की पत्तियों में एंटी–कैंसर गुण होते हैं। हालांकि इस पौधे का सेवन अपनी मर्जी से नहीं करना चाहिए और आयुर्वेदिक डॉक्टर की सलाह के बाद ही इसका उपयोग करना चाहिए। सत्यानाशी के पौधे में एंटीडायबिटिक, एंटीइनफर्टिलिटी, एंटीफंगल समेत कई तरह के संक्रमण से लड़ने के गुण होते हैं।

‘भारत की अखंडता को अनेक बार खंड-खंड किया है कांग्रेस ने : विहिप’

विश्व हिंदू परिषद कॉंग्रेस नेतृत्व से जानना चाहती है कि :

1. भारतीय संप्रभुता के प्रति इतनी लापरवाही क्यों बरती गई?
2. कच्चा टीवू के समर्पण से भारत के कौन से हित पूरे हो रहे हैं?
3. संसद को धोखे में क्यों रखा गया? इस समझौते से पहले या बाद में संसद में क्यों नहीं चर्चा की गई, जबकि वैधानिक रूप से संसद की अनुमति चाहिए थी?
4. तमिलनाडु के मछुआरों के हितों की रक्षा के लिए बार–बार आश्वासन देने के बावजूद उन सरकारों ने क्या किया ?

नई दिल्ली। अप्रैल 4, 2024। विश्व हिंदू परिषद ने आज कहा है कि सिर्फ कच्चा टीवू ही नहीं, कॉंग्रेस ने भारत की अखंडता को अनेक बार खंड–खंड किया है। विहिप के केंद्रीय संयुक्त महा सचिव डॉ सुरेंद्र जैन ने विश्वास जताया है कि आगामी चुनावों में भारत की राष्ट्रभक्त जनता ऐसी सरकार का चयन करेगी, जो ना सिर्फ कच्चा टीवू अपितु, माँ भारती के छीने गए समस्त भू भाग को कब्जा धारियों से मुक्ति दिला कर हमारे राष्ट्रीय संकल्प को पूरा कर सके।

उन्होंने कहा कि कच्चा टीवू हमेशा से भारत का अभिन्न अंग रहा है। श्रीमती इंदिरा गाँधी द्वारा इसे श्रीलंका को सौंप देने का निर्णय मनमाना और असंवैधानिक था। यह भारत की संप्रभुता के साथ किया गया खिलवाड़, तथा संसद व तमिलनाडु विधानसभा एवं वहाँ के मछुआरों के साथ किया गया एक धोखा था। तत्कालीन कॉंग्रेसी सरकारों द्वारा भारत की संप्रभुता और अखंडता के प्रति की गई इस गंभीर लापरवाही के लिए विश्व हिंदू परिषद इन सरकारों की घोर निंदा करती है।

डॉ. जैन ने कहा कि 26 जून, 1974 को इंदिरा जी की सरकार ने कच्चा टीवू श्रीलंका को प्लेट में इस प्रकार सजा कर दे दिया था, मानो वह उनकी व्यक्तिगत संपत्ति हो। 1956 से लेकर 1974 तक भारत की संसद में लंका की घुसपैठ और भारतीय मछुआरों की त्रासदी के बारे में कई बार प्रश्न किया गया, लेकिन तत्कालीन प्रधानमंत्रियों ने इस तरह के गोल–गोल जवाब दिए, जैसे उन्हें भारत की संप्रभुता और राष्ट्रीय अखंडता की कोई चिंता ही ना हो। तमिलनाडु की विधानसभा ने तो इसे वापस लेने के लिए कई प्रस्ताव भी पास किए, किन्तु, कॉंग्रेसी सरकारों के कानों पर जूं तक नहीं रेंगी।

यह मनमाना निर्णय असंवैधानिक भी था, क्योंकि माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने बेरुबारी मामले में स्पष्ट कहा था कि भारत को किसी संधि के अंतर्गत अगर कोई हिस्सा किसी अन्य क्षेत्र को देना भी पड़ता है, तो संसद से उसकी स्वीकृति अवश्य लेनी चाहिए। इस मामले में संसद को न केवल अंधेरे में रखा गया, अपितु गलत बयानी भी की गई। यहाँ तक कि तमिल समाज की भावनाओं को समझने के लिए तमिलनाडु विधानसभा में भी इस विषय को लाने की आवश्यकता महसूस नहीं की गई।

भारत की संप्रभुता व अखंडता के संबंध में कॉंग्रेस की सरकारें हमेशा संवेदन शून्य रही हैं। हमारे मुकुट कश्मीर के 42,735 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर चीन ने तथा 34,639 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर पाकिस्तान ने आजादी के थोड़े दिन बाद ही अपने कब्जे में ले लिया था, जिसको छुड़ाने का कोई गंभीर प्रयास इन सरकारों द्वारा नहीं किया गया। चीन के अवैध कब्जे पर तो नेहरू जी ने यहाँ तक कह दिया था कि “वहाँ कुछ पैदा नहीं होता इसलिए उसकी चिंता नहीं करनी चाहिए।” राष्ट्रीय हितों के प्रति इसी प्रकार की संवेदन–शून्यता नेहरू जी ने तब भी दिखाई थी, जब चीन ने तिब्बत पर अवैध कब्जा किया था।

विश्व हिंदू परिषद को यह स्पष्ट लगता है कि कॉंग्रेस सरकारों ने हमेशा अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए राष्ट्रहितों की उपेक्षा की है। विहिप को विश्वास है कि आगामी चुनाव में ऐसी सरकार अवश्य आएगी, जो न केवल कच्चा टीवू को वापस ले, अपितु अपने छीने गए क्षेत्रों को वापस लेने के राष्ट्रीय संकल्प को पूरा कर सके।

सेवा समर्पण त्याग व धर्म के पर्याय बाबा तरसेम सिंह की हत्या से स्तब्ध हैं : आलोक कुमार'

नई दिल्ली। 2 मार्च 2024। देवभूमि उत्तराखण्ड के उधमसिंह नगर में नानकमत्ता गुरुद्वारे के डेरा कार सेवा प्रमुख बाबा तरसेम सिंह जी की नृशंस हत्या पर विश्व हिन्दू परिषद ने गहरा दुख व्यक्त किया है। विहिप के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष व वरिष्ठ अधिवक्ता श्री आलोक कुमार ने आज कहा कि वे सेवा, समर्पण, त्याग व धर्म के पर्याय थे। वे एक ऐसे महान व्यक्तित्व थे, जिनका किसी से कोई बैर हो सकता है, यह अकल्पनीय है। सामान्य व्यक्तियों के बीच ही नहीं, अपितु वे तो समाज के प्रबुद्ध वर्ग में भी अपना बड़ा प्रभाव रखते थे। निरंतर लोगों की सेवा, जनहित के कार्य तथा नानकमत्ता गुरुद्वारे के पुनर्निर्माण हेतु कार सेवा की तमाम जिम्मदारियों की देखभाल करते हुए, उन्होंने अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया था। ऐसे महात्मा के हमसे दूर चले जाने से सम्पूर्ण विश्व का धर्म प्रेमी व सेवावृति हिन्दू–सिख समाज स्तब्ध व आहत है। बाबाजी हिन्दू–सिख एकता के सांझ थे। उनके बलिदान से यह सांझ और मजबूत होगी। वे सशरीर भले ना हों, किन्तु उनका कृतित्व व व्यक्तित्व सम्पूर्ण विश्व

को चिरकाल तक प्रेरणा व ऊर्जा देता रहेगा। हमें विश्वास है कि राज्य सरकार हत्यारों को कठोरतम दंड देगी।

उन्होंने कहा कि राज्य में अनेक शिक्षण संस्थाओं, अस्पतालों व सेवा केंद्रों के अतिरिक्त गुरुद्वारा नानकमत्ता के माध्यम से बाबा जी उत्तराखण्ड में किसी भी तरह की प्राकृतिक आपदा के दौरान लंगर, सहायता व राहत सामग्री पहुँचाने का काम तन–मन–धन से करते थे। इतना ही नहीं अयोध्या में श्री रामजन्मभूमि पर पुर्नस्थापित भगवान रामलला के भव्य मंदिर की प्राण–प्रतिष्ठा समारोह में उपस्थित रह कर, उन्होंने लगभग एक पखवाड़े तक राम भक्तों की सेवा में अखण्ड लंगर का संचालन किया था। श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति आंदोलन में सिख समाज के अमूल्य योगदान का वे अनुपम तरीके से वर्णन किया करते थे। हरिद्वार कुंभ के समय भी उनकी निरंतर लंगर सेवा से सभी परिचित हैं।

विहिप अध्यक्ष ने उन्हें स्मरण करते हुए कहा कि वे सनातन संस्कृति के प्रति अपनी प्रतिबद्धता और आस्था को सिख समाज सहित हिन्दू समाज की सभी धर्म–धाराओं के समक्ष प्रमुखता से रखते थे। उनके व्यक्तित्व के साथ उनके सेवा कार्यों की चर्चा सिर्फ उत्तराखण्ड में नहीं, अपितु संपूर्ण भारत में होती थी। उनके वृहद सेवा कार्यों से प्रभावित होकर ही उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री कई बार नानकमत्ता गुरुद्वारा द्वारा जा चुके हैं।

विश्व हिंदू परिषद घटना की कड़ी निंदा करता है और हम यह आशा करते हैं कि राज्य सरकार आरोपियों की त्वरित गिरफ्तारी कर उचित कार्यवाही करेगी।

pankajvhpharidwar108@gmail.com

झारखंड प्रांत कार्य समिति की तीन दिवसीय बैठक

देवघर, 16 मार्च, 2024। विश्व हिंदू परिषद झारखंड प्रांत कार्य समिति की तीन दिवसीय बैठक के उद्घाटन सत्र में मंचासीन अधिकारियों के द्वारा दीप प्रज्ज्वलन एवं भगवान श्रीराम के चित्र में पुष्प अर्पण, वैदिक मंत्रोच्चारण व विजय महामंत्र के साथ शुभारंभ हुआ।

मुख्य वक्ता के रूप में क्षेत्र मंत्री वीरेंद्र विमल ने कहा कि विश्व हिंदू परिषद की सांगठनिक बैठक में संगठन के विगत कार्यों की समीक्षा के साथ–साथ आगामी कार्य योजना बनाई जाती है। विश्व हिंदू परिषद के 60 वर्ष पूर्ण होने पर झारखंड प्रांत के सभी जिला प्रखंड एवं पंचायत स्तर पर समिति गठन का कार्य पूर्ण की जाएगी। उन्होंने कहा कि देश में सी.ए.ए लागू किया, जो स्वागत योग्य है। उन्होंने कहा कि भगवान पुरुषोत्तम श्री रामलला जी के प्राण प्रतिष्ठा से जगत के समस्त हिंदुओं में स्वाभिमान जगा है। आज सनातन परंपरा विश्व को शांति का संदेश देकर विश्व के अनेक देशों के लोगों के मन में अपना स्थान बनाया है।

प्रांत मंत्री मिथिलेश्वर मिश्र ने पदाधिकारी का परिचय एवं विगत 6 माह के कार्यों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। विहिप के देवघर जिला अध्यक्ष डॉ. राजीव पाण्डेय ने आए हुए प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए पवित्र भूमि देवघर के आराध्य स्थलों का परिचय कराया।

प्रांत अध्यक्ष चन्द्रकांत रायपत ने अध्यक्षीय उद्बोधन करते हुए कहा कि जिहाद एवं धर्मांतरण झारखंड प्रांत का एक बड़ा चिंतनीय विषय है, जिसका स्थाई निराकरण समाज के बीच सेवा, शिक्षा के साथ–साथ संस्कार दृढ़ीकरण की गति को बढ़ाना होगा। उन्होंने कहा कि हलाल इकोनामी के द्वारा देश के करोड़ों हिंदुओं को हलाल प्रमाण पत्र देने के नाम पर वसूली हो रही है, जिस पैसे का उपयोग देश के अंदर जिहाद एवं आतंकवाद को बढ़ावा देने में खर्च कर रही है।

प्रांत सहमंत्री मनोज पोद्दार ने विहिप केंद्रीय बैठक के प्रस्ताव का वाचन करते हुए कहा कि श्री राम मंदिर का निर्माण अब रामराज्य की ओर अग्रेषित कर रहा है। 22 जनवरी को 496 वर्ष के संघर्ष की गौरवमयी, सफल, सुखद परिणीति की अनुभूति संपूर्ण विश्व को हुई। रामलला के साथ उनकी मर्यादाओं एवं हिंदू संस्कृति की भी पुनः प्राण प्रतिष्ठा हुई। 22 जनवरी यह सिद्ध हो गया कि राम ही राष्ट्र हैं और राष्ट्र ही राम हैं। श्री राम मंदिर अनंत काल तक संपूर्ण मानवता को प्रेरणा का संदेश देता रहेगा।

'हिंदू स्वाभिमान की पुनर्प्रतिष्ठा के लिए मन्दिर की पुनर्प्रतिष्ठा जरुरी : अम्बरीश सिंह'

17 मार्च 2024 को बैठक के समापन सत्र में संबोधित करते हुए विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय मंत्री व विशेष संपर्क केंद्रीय सह प्रमुख अम्बरीश सिंह ने कहा कि 1964 में विश्व हिंदू परिषद की स्थापना देश के समस्त धर्मधाराओं के प्रमुख संतों की उपस्थिति में हुआ था, जिसके 60 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में विगत वर्षों कार्यों की समीक्षा के साथ वर्तमान परिपेक्ष्य में हिंदू समाज की परिस्थितियों का आकलन करते हुए उसके निराकरण के उपाय की योजना बनाई जा रही है। उन्होंने कहा कि कई दशकों तक मुस्लिम आक्रांताओं के अत्याचार के बाद भी हिंदू भावना को नहीं बदला जा सका। हिंदू समाज का संकल्प था कि श्री रामलला का मंदिर उनके जन्म स्थल पर ही बनायेंगे, वह संकल्प 22 जनवरी को पूर्ण हो गया। उन्होंने कहा कि हमारे हजारों मानबिंदुओं एवं प्रतीक चिन्हों को नष्ट करने का दुस्साहस किया गया था, परंतु आज परिस्थितियाँ बदली हैं। हमारे गौ, गंगा, वेद, संस्कृत, मठ, मंदिर, तीर्थ को पूर्वजों ने आस्था का केंद्र बनाए रखा, इसका परिणाम है कि हम सुरक्षित हैं। उन्होंने कहा कि हिंदू समाज की सामूहिक शक्ति के प्रकटीकरण का परिणाम है भगवान पुरुषोत्तम श्रीरामलला का भव्य, दिव्य व अलौकिक मंदिर। श्री सिंह ने कहा कि हिंदू के स्वाभिमान की पुनर्प्रतिष्ठा के लिए मन्दिर की पुनर्प्रतिष्ठा जरुरी है।

बैठक में प्रांत, विभाग और जिला में नवीन दायित्व की घोषणा की गई,

जिसमें श्री कृष्ण कुमार झा को प्रांत सामाजिक समरसता प्रमुख, श्री देवेन्द्र गुप्ता मंदिर अर्चक पुरोहित प्रमुख, श्री मनोज पाण्डेय को मंदिर अर्चक पुरोहित सह प्रमुख, प्रिंस आजमानी को विशेष संपर्क सह प्रमुख, बलदेवाचार्य को सत्संग प्रांत टोली सदस्य, रामप्रताप सिंह को सत्संग प्रांत टोली सदस्य, राजकिशोर को प्रांत कार्यसमिति सदस्य, रंजन कुमार सिन्हा को प्रांत सत्संग प्रमुख, शशि शर्मा को मातृशक्ति विभाग बाल संस्कार केंद्र प्रांत प्रमुख, डॉ. ज्योतिका श्रीवास्तव को मातृशक्ति प्रांत सेवा प्रमुख, कुंती भारती को मातृशक्ति सत्संग प्रमुख, जनार्दन पांडेय को सिंहभूम विभाग सहमंत्री, हरेराम ओझा को सिंहभूम विभाग विशेष संपर्क प्रमुख, अरुण सिंह को सिंहभूम विभाग सेवा प्रमुख, रविशंकर राय को रांची विभाग सहमंत्री, राजेन्द्र मुंडा को रांची विभाग सेवा प्रमुख, पारसनाथ मिश्र को रांची विभाग सह सेवा प्रमुख, मंटू दुबे को सिंहभूम विभाग गौरक्षा प्रमुख, अशोक वर्मा को साहेबगंज विभाग मंत्री सहित सभी जिलों के 149 कार्यकर्ताओं को नवीन दायित्व दिया गया।

बैठक में मुख्य रुप से क्षेत्र मंत्री वीरेन्द्र बिमल, क्षेत्र सहमंत्री डॉ. बिरेन्द्र साहु, क्षेत्र संगठन मंत्री आनंद कुमार, क्षेत्र धर्मप्रसार प्रमुख उपेन्द्र कुशवाहा, प्रांत अध्यक्ष चंद्रकांत रायपत, प्रांत कार्याध्यक्ष तिलक राज मंगलम, प्रांत उपाध्यक्ष गंगा प्रसाद यादव, प्रांत उपाध्यक्ष सुभाष नेत्रगवांकर, प्रांत मंत्री मिथलेश्वेर मिश्र, प्रांत संगठन मंत्री देवी सिंह, प्रांत सहमंत्री मनोज पोद्दार, प्रांत सहमंत्री रामनरेश सिंह, विशेष संपर्क प्रमुख अरबिंद सिंह, प्रांत गोरक्षा प्रमुख कमलेश सिंह, प्रांत प्रचार प्रसार सह प्रमुख प्रकाश रंजन, देवघर जिला अध्यक्ष डॉ. राजीव पांडेय, कार्याध्यक्ष डॉ. गोपाल शरण, मंत्री विक्रम सिंह सहित सभी जिलों से आए 256 प्रतिनिधि प्रांत के लोग उपस्थित रहे। बैठक का संचालन प्रांत मंत्री मिथिलेश्वर मिश्र व धन्यवाद ज्ञापन देवघर जिला कार्याध्यक्ष डॉ. गोपाल शरण ने किया।

netajiacademyhighschool@gmail.com

बाढ़ जिला स्थित गोवसा शेखपुरा ग्राम में विहिप द्वारा धर्म रक्षा यज्ञ तथा धर्म सभा का आयोजन

बाढ़, 18 मार्च। बाढ़ जिला स्थित गोवसा शेखपुरा ग्राम में विश्व हिंदू परिषद के द्वारा धर्म रक्षा यज्ञ तथा धर्म सभा का भी आयोजन हुआ। ग्राम के सैकड़ों बन्धुओं ने कार्यक्रम में भाग लिया। पूज्य नागा शिव जी मुनि उदासीन, पूज्य महर्षि योगानन्द जी व हरिद्वार से पूज्य महंत परासर मुनि जी ने सनातन परंपरा के विषय में जानकारी दी तथा इसके वैज्ञानिक महत्व को भी व्याख्यायित किया। उन्होंने कहा कि हमारे पूर्वज सनातन को धर्म ही नहीं, बल्कि जीवन पद्धति मानते थे, उसके अनुसार जीवन यापन करते थे। इसलिए सैकड़ों वर्ष तक सादगी पूर्ण जीवन को आनंद से जीते थे। रोजमर्रा के संकट को महापुरुषों के जीवन के आदर्शों के आधार पर सुलझाते थे। प्रान्त उपाध्यक्षा डॉ शोभा रानी सिंह ने बताया कि स्त्री की देवी के रूप में पूजन करना, ये सिर्फ सनातन में ही सम्भव है। हर स्त्री में माँ के स्वरूप का दर्शन हमारी परंपरा को श्रेष्ठ बनाता है। क्षेत्र धर्म प्रसार उपेन्द्र कुशवाहा जी ने कहा कि हमें ऐसे लोगो से सावधान रहना है, जो जाती विभेद फैला कर, समाज में, वैमनस्यता व संघर्ष पैदा करते है, हमें समाज में समरसता का भाव लाना है। हमारा रग रग हिन्दू परिचय रहना चाहिए।

कार्यक्रम में विभाग समरसता प्रमुख सन्दीप कुमार, जिला मंत्री विवेक कुमार, जिला कोषाध्यक्ष सन्तोष कुमार, जिला सेवा प्रमुख अनिकेत कुमार, रजनीश कुमार, पप्पू जी सहित अनेक कार्यकर्ता भी उपस्थित थे।

कानपुर प्रांत धर्मरक्षा निधि समर्पण कार्यक्रम को संबोधित करते
विहिप केन्द्रीय उपाध्यक्ष मा. चम्पत राय जी तथा कार्यक्रम में उपस्थित प्रांत के पदाधिकारी व दानदाता

देवगढ़, महाराष्ट्र में पूज्य किसनगिरी जी महाराज की पुण्यतिथी उत्सव में केंद्रीय मार्गदर्शक मंडल के सदस्य पूज्य स्वामी भास्कर गिरी जी महाराज के साथ उपस्थित विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे

कानपुर प्रांत की दो दिवसीय कार्ययोजना बैठक में उपस्थित क्षेत्र, प्रांत के पदाधिकारी व कार्यकर्ता

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6
email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/24-26
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
प्रकाशन तिथि : 13.04.2024
प्रेषण तिथि : 14-15 (अग्रिम-पाक्षिक)

LPS BOSSARD
Proven Productivity

PRODUCT SOLUTIONS

Whether a suitable standard solution or a customized component - fastening technology must be matched with a specific customer need. At LPS Bossard we have a solution to your every fastening challenge.

APPLICATION ENGINEERING

Product designers and production engineers all face a maze of challenges when designing and building their products. Making the right choice of fastening solution speeds up assembly and reduces life cycle costs. The application engineers at LPS Bossard have the expertise to help make that critical decision.

SMART FACTORY LOGISTICS

Smart Factory Logistics is an end-to-end service for managing your B- and C-parts. It is a time-tested and proven methodology that helps to leverage hidden potential for productivity improvement.

Rajesh Jain
M.D., LPS Bossard Pvt. Ltd.
Trustee, Vishva Hindu Parishad

LPS Bossard Pvt. Ltd.
NH-10, Delhi-Rohtak Road
Kharawar Bye Pass
Rohtak-124001 (INDIA)
T +91 1262 305164-198
F +91 1262 305111,112
india@lpsboi.com
www.bossard.com

प्रकाशक व मुद्रक हरिशंकर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'रॉयल प्रेस' बी–82, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेस–1, नई दिल्ली–110020 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय शंकर तिवारी